सत् की वाणी
सत् की ज़बानी

सत् की वाणी – सत् की ज़बानी

(भाग दूसरा)

(श्री आनंद साईं जी के अमृत प्रवचनों में से)

प्रकाशक

साईं पब्लिकेशन्स

श्री आनंद साईं मार्ग, आनंदा अपार्टमेंट, क्लार्क टाऊन,

नागपुर-440 004

web : www shrianandsai.org

e-mail :

प्रार्थना

हे मेरे साईं पिता बालक की विनती सुन जरा।
कैसे बताऊँ तुझ से मैं मेरा फ़साना दुख भरा।।

मोड़कर दुनिया से मुँह तुझ को ही पाना चाहूँ मैं।
अपने पिता की गोद में फिर से ही आना चाहूँ मैं।।

मगर ये तुमरी माया मुझ को सदा भटकाये है।
तेरे इस बच्चे को माया देख लो अब खाये है।।

माया के इस तूफान में बालक ये डूबा जाये है।
मन में लहरें उठ रहीं बुद्धि मेरी भरमाये है।।

थाम लो साईं पिता बच्चे को अब तुम थाम लो।
तुम तो कभी छोड़े नहीं शरण में तुमरी आए जो।।

मुझ को इक तेरा भरोसा एक तेरी आस है।
रक्षा करो रक्षा करो ये ही मेरी अरदास है।।

" ॐ श्री साईं "

प्रस्तावना

सत् एक है। चाहे आप उसे किसी भी नाम से बुला लो लेकिन है वो एक ही। और उसी सत् के इशारे पर उसी की इच्छा अनुसार इस सारी कायनात में हरकत हो रही है। वो ही एक सत् समय-समय पर गुरु रूप से प्रगट हो कर जगत को सत् संदेश देता है। नाम रूप अलग-अलग होने से क्या फर्क पड़ता है। हैं तो सभी एक।

यही एक पूर्ण सत् श्री आनंद साईं के रूप में जगत् में प्रगट हुआ सत्मार्ग बताया और सत् में समा गया। श्री साईं गीता, श्री अमृत सागर अन्य कई ग्रन्थों की उन्होंने रचना की। साईं पब्लिकेशन्स की स्थापना की और जब तक जगत में रहे गुमनाम रहे। उन्हीं के द्वारा समय-समय पर दिए गए प्रवचनों को लिपिबद्ध कर जगत कल्याण के लिए प्रकाशित किया जा रहा है। प्रवचन करते-करते स्वयम ईश्वर रूप से वाणी आना शुरू हो जाती थी। ऐसी वाणी सुनकर लगता मानो ईश्वर साक्षात हमें समझा रहे हैं। इस पुस्तिका को पढ़ते हुए आपको ये अनुभूति अवश्य होगी।

इस पुस्तिका के पहले भाग को सभी ने बहुत पसंद किया। लोगों को सत्प्रकाश मिला। इस श्रृंखला का यह दूसरा अमृत प्याला आप लोगों के हाथों में देते हुए अति प्रसन्नता हो रही है। इस अमृत प्याले को पीओ और इसमें जीओ; बाबा साईंनाथ आपका जीवन धन्य कर देंगे। पीने मात्र से बात नहीं बनती इसमें जीवन ढालना आवश्यक है। और ये गुरुदया से ही संभव है।

साईं अर्पनम् अस्तु।

– प्रकाशक

गृहस्थियों के लिए
पँच कल्याणकारी महान तीर्थ

१) जहाँ तक बन सके श्री भगवान की तस्वीर के पास अखंड ज्योत जलती रहनी चाहिए।

२) महीने में एक बार श्री बजरंगबली और गणपतिजी की मूर्ति को सिंदूर और तेल का चोला जरूर चढ़ाना चाहिए।

३) प्रातःकाल उठकर बेजुबान जीवों को कुछ चाँवल की कनकी जरूर डालनी चाहिए।

४) सुबह शाम श्री भगवान के सामने साष्टांग दण्डवत् प्रणाम करके अपने आपको शुद्ध मन से उनके अर्पित करना चाहिए।

५) श्री भगवान की पूजा और सत्संग में सदा सिर ढककर बैठना चाहिए।

"ॐ श्री साईं"

"ॐ साईं आनंदाय नमः"

सत् की वाणी – सत् की जबानी

(श्री आनंद साईं जी के अमृत प्रवचनों में से)

अमृत पीना है तो घट के अन्दर आ। घट में सब कुछ है। घट में सच्चाई का सागर लहरें मार रहा है। अपने आपको भूल कर बाहर किस को ढूँढ़ रहा है? माँ घट में हैं। तू बाहर माँ की तलाश कर रहा है। बाहर का खेल घट से हो रहा है। तू खेल में ही मस्त हो रहा है। तू बाहर के खेल में ही मस्त हो रहा है। अमृत का सागर अन्दर में ठाठें मार रहा है। तू बाहर में खुशी देख रहा है। आनन्द घट में है तू विषय आनन्द के पीछे दौड़ रहा है। ईश्वर घट में हैं तू बाहर मन्दिर मस्जिद में ढूँढ़ रहा है। जो कुछ है सो घट में है। बाहर कुछ भी नहीं है। तेरे शरीर के ऊपर भी जो सुख दुःख का भोग आते जा रहा है वो भी घट से आते जा रहा है। बाहर से करने से क्या होगा?

जीवन की पूर्ण सच्चाईयाँ घट से मिल सकती हैं बाहर से नहीं। बाहर से इशारे मिल सकते हैं, अन्दर की पूर्ण सच्चाई के बारे में। सच्चाई नहीं मिल सकती। सच्चाई को पाने के लिए तो अन्दर जाना ही पड़ेगा। संघर्ष शरीरों में है मन

बुद्धियों में है आत्मा में नहीं है। आत्मा तो सबके अन्दर वो ही है। बाहर सागर को ही देख। ऊपर की जो सागर की लहरें हैं सदा एक दूसरे से टकराती रहती हैं। नीचे चले जाओ – एकदम शान्त। ये ही हाल इस मानव जीवन का है। यदि तुम ऊपर के अहम् में रह रहे हो तो दिन रात एक दूसरे से टकराते रहोगे। एक दूसरे को कुचलने की कोशिश करते रहोगे खुद आगे बढ़ने के लिए। नीचे चले जाओ तो जो मुझ में है सो तुझ में है सो सब में है। एक आत्मा सबके अन्दर रमी हुई है। संघर्ष की कोई जगह ही नहीं, कोई बात ही नहीं। ये संघर्ष ही जीवन को अशान्त बनाता है। जब संघर्ष ही नहीं रहा तो जीवन अपने आप शान्त हो जाता है। जो मुझ में है सो तुझ में है तो हानि किस की कौन करे?

जो तेरा है सो मेरा है। फिर ये ज़ख़ीरा क्यों? फिर ये धन दौलत का ज़ख़ीरा क्यों? जो तेरा है सो मेरा है फिर एक गरीब एक अमीर क्यों? बादशाह है वो जो एक में मिलकर एक हो गया है। कंगाल है वो जो लाखों करोड़ों कमा कर फिर और हवस रखता है। माँ के सभी ख़ज़ाने माँ के बच्चों के लिए होते हैं। फिर ये बड़प्पन क्यों? अध्यातम् का रास्ता धीरज का रास्ता है। अध्यातम् का रास्ता धैर्य का रास्ता है। जल्दी का रास्ता नहीं है। फिर ये जल्दी भी क्यों? **There is no short cut to success in Spirituality.** माँ नहीं चाहें तो जीवन भी कैसे उठे? अपनी करनी से क्या होता है? पुरुषार्थ पुरुषार्थ की रट लगाता है, पुरुषार्थ में क्या पड़ा है? जो होता है साईं इच्छा से होता है। पुरुषार्थ से कुछ भी

नहीं होता।

भूला भटका मुसाफिर आ गया माँ के दर पर। दया हो गई सब कुछ पा लिया। कुछ पाना बाकी नहीं रह गया। संसार के नियम दुनियाँ के लिए हैं, भगवान के लिए नहीं हैं। भगवान जो चाहें सो करें। इसको समझने का है। भगवान हिम्मत देते हैं तो हिम्मत बंध जाती है। भगवान हिम्मत तोड़ देते हैं तो हिम्मत टूट जाती है। मनुष्य क्या कर सकता है? मनुष्य के हाथ में क्या है? क़र्मों का खेल है। कर्मबन्धन में पड़ा जीव पुरुषार्थ की रट लगाता है। जो होता है माँ की इच्छा से होता है। कर्मफल भोगना ही पड़ता है। पुरुषार्थ कर्मफल को बदल नहीं सकता।

कर्मफल को बदलने का तरीका है – शरणागति। कर्मफल को बदलने का तरीका एक ही है – पूर्ण शरणागति। मैं गरीब तू गरीब निवाज़, मैं गरीब तू गरीब निवाज़, मैं गरीब तू गरीब निवाज़, मैं गरीब तू गरीब निवाज़। अन्दर के फल मीठे होते हैं बाहर के कड़वे। जो घट में रहता है उसकी पूर्ण रक्षा होती ही है। जो घट में माँ की गोद में रहता है उसकी पूर्ण रक्षा होती ही है। आया है तो ऐसी करनी कर कि फिर आना जाना ना पड़े। आत्म अर्पित हो जा आना जाना रुक जाएगा। आत्म अर्पित हो जा आना जाना छूट जाएगा, रुक जाएगा। "मानुष भूला आप में चला चौरासी माहीं" जो अपने सत् स्वरूप को भूल जाता है वो चौरासी में चले जाता है।

●●●

चुनना है माँ या माया

जग छूटे पर साईं न छूटे।
सब रूठें पर साईं न रूठे।।

तोड़ दिया जग के सपने को।
जोड़ दिया तुझसे अपने को।।
भर-भर पीता रहूँ साईं रस।
मेरा पात्र कभी न फूटे।।

जग छूटे पर साईं न छूटे .....

हमने संसार में रह कर ऐसी करनी करनी है जिससे भगवान हमें मिल जायें। संसार में रहते हुए, सब कुछ करते हुए कैसे रहना है, कैसी करनी करना है, इसको अच्छी तरह से समझना है। सुबह से लेकर शाम तक कितनी स्थितियाँ ऐसी आती हैं हमारे सामने, एक सच्चे साधक के सामने जब उसे चुनना पड़ता है – भगवान और दुनियाँ के दरम्यान। दिन में दस बार शायद इससे भी कितनी बार ज्यादा चुनना पड़ता है कि दुनियाँ को खुश करना है कि भगवान को खुश करना है। ये सब के समझने की चीज़ है क्योंकि महाराज ने आपको जंगल में नहीं भेजना, गृहस्थ में रखकर आपको सद्गति देना है, तो क्या करना है? अच्छी तरह समझ कर करना है। पहले समझना है। तो क्या कहते हैं – जग छूटे पर साईं न छूटे, सब रूठें पर साईं न रूठे। जगत् हमें एक ओर ले जाता है और

भगवान की सत्ता हमें दूसरी तरफ खींचती है। भगवान की कशिश हमें दूसरी तरफ खींचती है। हमें क्या करना है? लोग डर जाते हैं दुनियाँ को नाराज़ करेंगे तो दुनियाँ में रहेंगे कैसे? संसार को नाराज़ कर देंगे तो संसार में रहेंगे कैसे? चारों तरफ यही सुनने को मिलेगा। जब कोई साधक भगवान की ओर चलने लगता है तो लोग उसको डराते हैं, भय दिखाते हैं, – तू दुनियाँ को नाराज़ करेगा। भगवान को पकड़ेगा तो दुनियाँ में रहेगा कैसे तू? क्या जवाब है इसका? बड़ा सुन्दर जवाब है – दुनियाँ राम की है, जगत् राम का है तुम राम के बन के रहोगे तो जगत् झख मार कर तुम्हारे पीछे आयेगा। क्योंकि जगत् उसका है दृढ़ हो जाओ। डरो मत यदि भगवान को पाना है भगवान के रास्ते चलना है तो निडर होकर चलो बिल्कुल निडर होकर। जरा भी नहीं डरना दुनियाँ से, जरा मत भय लाओ दुनियाँ का, क्यों? क्योंकि दुनियाँ उसकी है। जब राम को अपना लिया, राम हमारा हो गया तो राम की दुनियाँ जाती कहाँ है? झख मार कर हमारे पीछे आयेगी, आना ही पड़ेगा उसको, जा नहीं सकती कहीं। अगर नहीं आप के पीछे आई तो मेरे पास आना कि आपने गलत बोला है भगवान की गद्दी पर बैठ कर। दुनियाँ को तुम्हारे पीछे आना ही पड़ेगा। राम की दुनियाँ है राम के हाथ में है। राम को हमने पकड़ लिया तो दुनियाँ जाती कहाँ है? जा कहाँ सकती है? तुम या एक को खुश कर सकते हो या अनेकों को खुश कर सकते हो। दुनियाँ जब से बनी है न आज तक किसी की सगी हुई है न तुम्हारी सगी होगी। जब से दुनियाँ बनी है आज तक

किसी की सगी नहीं हुई तुम्हारी भी सगी नहीं होगी। तुम यदि दुनियाँ के पीछे राम को छोड़ दोगे तो राम भी हाथ से जायेगा दुनियाँ भी जायेगी। दुनियाँ से दस दफा अच्छे बनते रहो एक दफा दुनियाँ के साथ न कर सके तो दस दफा का किया एक मिनट के अन्दर स्वाहा। उसी वक्त नाराज़ हो जाती है, निन्दा करना शुरु कर देती है, बुराई करनी शुरु कर देती है। दुनियाँ में कोई किसी का सगा नहीं। अगर कोई सगा है तो एक राम है। उस राम को पकड़ के रखो मज़बूती से, डरो मत राम की ओर चलने से ये दुनियाँ हमारा कुछ बिगाड़ नहीं कर सकेगी। यदि राम को हमने मज़बूती से पकड़ा है तो राम की दुनियाँ हमारा कुछ बिगाड़ नहीं सकती, कुछ नहीं, बाल बीका भी नहीं कर सकती, चार दिन हमारी मुख़ालफ़त करेगी, झख मार कर हमारे पीछे आयेगी। उसको आना ही पड़ेगा। ये हर साधक की कहानी है। जब कोई साधक, गृहस्थी साधक भगवान की ओर चलता है उसके बन्धु पहले पहल रास्ते में बाधा डालते हैं। सब साधकों की यही कहानी है जो कोई बुज़दिल साधक होते हैं वो डर कर छोड़ देते हैं वो कायर होते हैं। रिश्तेदारों को लगता है हमें नुकसान होगा संसारी जीवन में यह भगवान की तरफ चल पड़ा तो हमें संसारी चीज़ों में हमारे संसारी आराम में, संसारी मौज मजे में कुछ फर्क पड़ेगा। इसलिए मुख़ालफ़त करते हैं। ऐसे देखकर कायर लोग छोड़ जाते हैं। लेकिन जो हिम्मत करता है, दो-चार साल हिम्मत रखता है, वो ही बन्धु और रिश्तेदार पीछे दौड़ते हैं। जब जरा सी सफलता मिलती है अध्यातम् के रास्ते में तो वह

फ़ख्र करने लगते हैं। दुनियाँ को जा कर कहते हैं यह हमारा रिश्तेदार है – देखो कहाँ से कहाँ पहुँच गया है, पीछे आते हैं वे ही रिश्तेदार। दो-चार साल पहले बुरा भला कहते थे, पहले हमें चलने नहीं देते थे, हमारे रास्ते में बाधा डालते थे अब वे ही जहाँ बैठते हैं हमारे गुण गाते हैं, जहाँ बैठते हैं हमारी तारीफ करते हैं देखो हमारा फलाना रिश्तेदार कितनी ऊँचाई पर चला गया वाह! वाह! वाह! यह एक की नहीं सब सन्तों की कहानी है। क्यों? क्योंकि दुनियाँ राम की है। पहले थोड़ा वो test लेता है भला देखो इसमें कुछ जिगरा है कि नहीं कि बुज़दिल है संसार की ज़रा सी मुख़ालफ़त में छोड़ जायेगा। कोई कायर लोग छोड़ जाते हैं। लाखों जन्म रोना पड़ता है उनको। अपने हज़ारों लाखों जन्म बरबाद कर लेते हैं। जो दृढ़ रहते हैं, मज़बूत रहते हैं, वही बन्धु वही रिश्तेदार दो-चार साल बाद हाथ जोड़ कर पीछे आते हैं। हिम्मत रखने की ज़रूरत है। वाह! वाह! वाह! धन्य हो भई आप, धन्य हो आप। वही फिर मुँह से बोलते हैं कहाँ पहुँच गये धन्य हो। हमारा भाई धन्य है, हमारी बहन धन्य है, हमारी पत्नी धन्य है, हमारी माँ धन्य है, हमारा पति वाह! वाह! वाह! कहाँ पहुँच गया। जो पहले रोड़ा अटकाते थे अब दिन-रात गुण गाते हैं, लोगों के पास जा कर भी गुण गाते हैं। यह सब साधकों की कहानी है। पर जिस दिन दुनियाँ को पकड़ लिया तो राम रूठ गया उससे। अरे जिससे राम रूठ गया तौबा! तौबा! तौबा ... भगवान मैं कौन से शब्द बोलूं, क्या आफत नहीं आती उसके ऊपर। जब तक राम राजी है तब तक ही हँस खेल सकते हैं,

खुशी से रह सकते हैं, आराम से रह सकते हैं। उसका तेवर बदला नहीं कि सगी माँ भी राक्षस बन जाती है, सगी माँ भी खाने को आती है, जिस पल राम हुआ नाराज़, दुनियाँ में कोई सगा नहीं रहता। कोई दुनियाँ में सगा नहीं रहता हर कोई खाने को आता है। हमारी प्रारब्ध ही फूट जाती है। वो भी मिनट-मिनट हमें धक्के लगाती है। दुनियाँ में हमें कोई छोड़ता नहीं है। तो याद रखो – दिन में दस बार आप सब को चुनना पड़ता है और चुनना पड़ेगा – राम या दुनियाँ, राम या जगत्। गलत **choice** कर लिया तो हज़ारों-लाखों जन्म रोना पड़ेगा। ठीक **choice** किया, ठीक चुना तो यह जीवन भी आनन्द में गुज़रेगा और आगे की भी बात बन जायेगी। मीरा की जो कहानी सुनाते हैं हम कहते हैं मीरा की कहानी, मीरा की कहानी नहीं हर साधक की कहानी है। भगवान **test** लिये बिंना किसी को आगे बढ़ने नहीं देता है। पहले थोड़ा समय हर एक को उस **test** में से गुज़रना पड़ता है। भगवान देखता है ये दयानतदार है कि नहीं, कि खाली मुँह से ही डींग मारना जानता है। हम दयानतदार हैं क्या? ये दयानतदार है क्या? ये मेरे लिये कुछ तकलीफ उठा सकता है? मेरे लिये कुछ कर सकता है? कुछ कुरबानी करने को तैयार है? जो हमने जिगरा रखा फिर वो हमारा हो जाता है। थोड़े दिन तक तकलीफें आती हैं फिर वो हमारा हो जाता है। जिस पल वो हमारा हो जाता है उसकी दुनियाँ भी फिर हमारी हो जाती है, वो हमारे पीछे दौड़ती है, वही बन्धु वही रिश्तेदार जो आज हमें बुरा भला कहते हैं। वो हमारे सामने

हाथ जोड़ कर खड़े रहते हैं, हमारे बराबर में खड़े नहीं होते नीचे बैठते हैं अदब से। ये कहाँ पहुँच गया वाह! वाह! वाह! अदब से बैठते हैं, इज्जत से बैठते हैं, हाथ जोड़ कर खड़े रहते हैं। यह हर साधक की कहानी है। तो याद रखो दो-चार साल हिम्मत रखने की बात है, फिर मज़ा ही मज़ा है, आनन्द ही आनन्द है। और जो दो-चार साल में हिम्मत तोड़, गया वो इस जन्म में ही नहीं डूबा हज़ारों जन्मों के लिये डूब गया। चुनना आप का काम है।

जहाँ-जहाँ पद चिन्ह तुम्हारा।
झुके वहीं पर शीश हमारा।।
मेरा धन तो साईं चरण हैं।
मेरे धन को कोई न लूटे।।
जग छूटे पर साईं न छूटे .....

ध्यान से सुनो, समझने की बात है – भागवत धर्म में इन्हीं चीज़ों की महिमा है। इन्हीं चीज़ों से जीव इस भवसागर से निकलता है। इनके महत्व और महिमा को अच्छी तरह से समझो, बहुत अच्छी तरह से समझने की बात है। सत्य जब जगत् में प्रगट होता है, उस समय पिंजरे का दरवाज़ा खुल जाता है जीवों के लिये। और पिंजरे से, इस भवसागर से निकलना कितना आसान हो जाता है कि पूछो मत, भरोसा नहीं आता। क्यों? इस भागवत धर्म की वजह से। कैसे? भागवत धर्म में कितना महत्व है इन चीज़ों का? किस चीज़ का – सत्य के दर्शन का, सत्य के संग का, सत्य के

नमस्कार का, सत्य के चरणामृत का, सत्य के प्रशाद का, सत्य की वापरी हुई किसी भी चीज़ का, जिस धरती पर सत्य के चरण लगते हैं वो धरती पावन होती है, वो धरती तारने वाली हो जाती है। इनमें से किसी चीज़ का भी जब हम सेवन करते हैं तो हमारे हज़ारों-लाखों जन्मों के पाप कट जाते हैं। जो कठिन से कठिन तपस्या से भी नहीं कटते। जब सत्य का जगत् में अवतरण होता है तो बड़ी आसानी से हमारे पाप कटते जाते हैं। केवल सत्य के दर्शन मात्र से पाप कटता है। सत्य के सन्मुख आने से पाप कटता है। सत्य का चरणामृत पीने से पाप कटता है। सत्य का प्रशाद ग्रहण करने से पाप कटता है। सत्य की कोई भी वापरी हुई चीज़ को इस्तेमाल करने से पाप कटता है। कितना आसान हो जाता है उस समय हमारा चौरासी के इस चक्कर से निकलना जीव इसकी कल्पना भी नहीं कर सकता है। यही ऊपर की पंक्तियों में कहा गया है। जहाँ-जहाँ पद चिन्ह तुम्हारा। झुके वहीं पर शीश हमारा।। मेरा धन तो साईं चरण हैं। मेरे धन को कोई न लूटे।।

दो त्रिशूल स्थापित कर दिये हैं भगवान शंकर के, जो शुद्ध मन से आकर इन त्रिशूलों की पूजा करेगा ये त्रिशूल उसकी हर मुसीबत, हर आफत से रक्षा करेंगे। अन्दर में त्रिशूल रख दिया है वहाँ आकर नमस्कार करो अपने पाप धोओ। तीन सीढ़ियाँ लगा दिया है इन सीढ़ियों पर अच्छी तरह से नाक रगड़ो यह बाबा साईंनाथ के दरबार की सीढ़ियाँ हैं। इन सीढ़ियों पर अपने नाक रगड़ के माथा रगड़ के आओ और

सब पाप धो जाओ – फिर हर रोज सत्य की परिक्रमा करो, गुरु ॐ की धुनि के साथ परिक्रमा करो और देखो एक- एक कदम के ऊपर आपका सैकड़ों जन्म का पाप कटता है। दो-चार चक्कर ही लगा लेते हो, परिक्रमा करते हो तो हाथ की रेखाएँ बदल जाती हैं। कितना आसान कर दिया है महाराज ने हमारे जन्म-जन्मांतर के खोटे संस्कार खत्म करना। हमारे जन्म-जन्मांतर के पाप धोने के लिये जन्म-जन्मांतर के जो भी हमने उल्टे सीधे कर्म किये हैं उनको धोने के लिए कितना आसान कर दिया है महाराज ने इसी को समझो। कितना सरल कर दिया, भरोसा नहीं आता है। इतनी आसानी से पाप कट गये बिना अस्पतालों में गये, बिना भयानक तकलीफें उठाये, बिना आफतें उठाये, हमारे संस्कार पाप कट जायेंगे भरोसा नहीं आता एक जन्म में हम छूट सकते हैं! इतनी आसानी से छूट सकते हैं! खाली नमस्कार करने से! खाली शुद्ध भाव से पूजा करने से हम छूट सकते हैं! खाली दरबार में आकर बैठने से हमारा पाप कट जाता है! भरोसा नहीं आता परन्तु अपने-अपने जीवन को देखो। चार बरस के अन्दर सब के जीवन में कितना भारी परिवर्तन आया है। उसका अर्थ क्या है, कि धोने वाले ने हज़ारों जन्मों के खोटे संस्कार धो दिये हैं इसलिए परिवर्तन आया है। उसका नाम समर्थ बाबा साईंनाथ है। बाबा साईंनाथ ने चार बरस में सैकड़ों जन्मों के पाप धो दिये हैं – इसलिए इतना भारी परिवर्तन आया है हर एक के जीवन में। इसलिए हर एक के मन की इतनी चित्तशुद्धि हुई है। यह समझने की चीज़ है।

इतना हम माया से निकल गये हैं, इतना हम संसारी वासनाओं से उठ चुके हैं कि इस दरबार के बाहर मिसाल नहीं मिलती लोगों की जो ऐसे माया से, वासनाओं से उठे हों। इसका अर्थ क्या है? बाबा साईंनाथ ने सैकड़ों हजारों जन्मों के खोटे संस्कार और पाप धो दिये तब माया से छुटकारा हो रहा है। तब हम माया से निकल रहे हैं। इसलिए अब माया की कशिश इतना असर नहीं करती। अब वासनाएँ हमारे ऊपर इतना असर नहीं करती। बाहर जगत् में, जरा इस दरबार से बाहर निकलो तो पता लगता है कैसी भयानक आग लगी हुई है, चारों ओर लोग वासनाओं की अग्नि में जल रहे हैं। चारों ओर जल रहे हैं। यहाँ बाबा साईंनाथ का कितना ज़बरदस्त रक्षा का हाथ है। जो बाहर से आता है दंग हो जाता है। किसी को अपने तन का भास नहीं है यहाँ पर। क्या अर्थ है इसका? धुलाई कर दिया किस तरह से, धुलाई कैसे किया है। आपने कौन सी तपस्या की है, कौन से दो-दो बजे उठे हो, कौन सा सारा दिन माला घुमाई है, कौन से तीर्थ-व्रत किये हैं, क्या किया है? यह चिन्ह जो हैं इन्हीं की वजह से। रोज़ शुद्ध मन से दरबार में आना, वाणी को सुनना, वाणी से प्यार करना, गुरु महाराज से भी सच्चा प्रेम करना, वाणी पर चलना, भाव से आरती पूजा करना, जो चिन्ह श्री महाराज ने स्थापित किये हैं, भगवान शंकर के, शुद्ध मन से रोज़ उनकी पूजा करना। क्या बात बन गई है उनकी। शुद्ध मन से रोज़ चरणामृत लेते हो। जिन्होंने शुद्ध मन से निष्काम भाव से वो चरणामृत पिया है उनके हज़ारों जन्मों के पाप उस चरणामृत

ने धो दिये हैं। जो हर रोज़ प्रशाद आप लेते हैं कितना महत्व है उसका। यह सब चीज़ें मनन करने की हैं। जो अनुभव हमें मिलते हैं उनको मनन करना है समझना है ऐसे क्यों हो रहा है? इसका अर्थ क्या है? इसका मतलब क्या है? जिन-जिन लड़के-लड़कियों के घरों में श्री महाराज इस शरीर को ले जाते रहे क्या-क्या अनुभव उनको होते रहे मनन करने की चीज़ें हैं। जिन-जिन पलंगों पर, बिस्तरों पर, गद्दों पर, जहाँ-जहाँ पर महाराज ने इस शरीर को बिठाया वहाँ से लोगों को क्या-क्या अनुभव नहीं हुए। इसका अर्थ क्या है? देने वाले ने अनुभव क्यों दिये समझो मनन करो इसका मतलब क्या है। पूरी की पूरी **family** पूरा का पूरा परिवार मस्ती में पड़ा रहता था, सारा सारा दिन। इसका अर्थ क्या है जहाँ-जहाँ ये शरीर जाता है वहाँ कैसी स्थिति हो जाती है इसका अर्थ क्या है इन चीज़ों को समझने का है। यह मनन करने से हमारे में दृढ़ता आती है, हम आगे बढ़ते हैं, दृढ़ होते हैं, अर्थ को समझते हैं, जिस के लिए अनुभव दिया जा रहा है हमें दृढ़ करने के लिए आगे बढ़ाने के लिए, मजबूत करने के लिए, विश्वास को दृढ़ करने के लिए, ये अनुभव दिया जा रहा है। अब हमें इसको समझना है।

अगर कभी जाना हो तुमको।
इतना वर दे देना हमको।।
उधर हृदय से तुम जाओ और।
इधर सांस की डोरी टूटे।।
जग छूटे पर साईं न छूटे .....

उधर हृदय से तुम जाओ और इधर स्वास की डोरी टूटे। जिस पल हृदय से तुम निकल गये उस पल मेरा स्वास आगे नहीं आना चाहिए, मेरे को ज़िन्दा नहीं रहना चाहिए। जब ऐसा प्रेम हो जाता है तो भगवान जाता कहाँ है? भगवान की हिम्मत कहाँ है जाने की। तो ऐसा सच्चा-सुच्चा प्रेम होना चाहिए। उधर हृदय से तुम जाओ और इधर स्वास की डोरी टूटे। जिस पल हृदय से तुम्हारा ध्यान चले जाये उसी पल मेरे प्राण छूट जायें। कितनी प्रेम की और प्यार की ऊँची स्थिति बताई गई है। भाग्यवान हैं ऐसे जीव जो भगवान से, गुरु महाराज से ऐसा सच्चा प्यार करते हैं। वो खुद ही पावन नहीं होते सारे जगत् को पावन करके जाते हैं।

●●●

अर्पित जीवन

अर्पित हुए बिना दया नहीं मिलती है। सच्ची दया पाने का अधिकारी केवल वो ही है जिसने अपने आपको सच्चे मन से हरि चरणों में अर्पित कर दिया है। जो नाम चाहता है, दुनियाँ में बड़ा बनना चाहता है, दुनियाँ में लाखपति करोड़पति बनना चाहता है उसको दया नहीं मिलती है। इसको समझने का है। दया उसी पर होती है जो मिट्टी में मिल जाता है, जो साधारण होकर रहना चाहता है। दया पाने का केवल ये ही एक रास्ता है। दूसरा और कोई रास्ता नहीं है। अहंकारी जीवों, अहंकारी आदमियों के लिए दया नहीं है। अहंकार कई तरह का होता है। अहंकार धन दौलत का

होता है, जायदाद का होता है, दुनियाँ में नाम कमाने का होता है और अध्यातम में अपने आपको दूसरों से अच्छा समझने का होता है। जब तक हम अपने आपको दूसरों से अलग कर रहे हैं, अच्छा समझ रहे हैं, तब तक पूर्ण दया हमारे ऊपर नहीं आती है। इस सच्चाई को ग्रहण करने का है। अपने को कभी बड़ा नहीं समझना। बड़ा बनने से हानि होती है। कभी बड़ा बनना नहीं। सदा दीन बन कर रहना, अर्पित होकर रहना तभी हम दया पाने के अधिकारी होते हैं। जब तक अहंकार, अभिमान मन में है तब तक दुःखों, क्लेशों से छुटकारा नहीं हो सकता। सदा बच्चे बन कर रहो। बड़े कभी नहीं बनो। बड़ा बनने से जीव की हानि होती है। भगवान को सदा दीन प्यारा होता है। इस बात को कभी भूलना नहीं। भगवान सदा दीन की रक्षा करते हैं। बड़ों की कभी नहीं। जब तक हम सच्चे मन से अर्पित नहीं हो जाते तब तक हम बड़े हैं। अर्पित होने का अर्थ ही है मैं नहीं सब कुछ तू ही है। जब तक जीव अत्यंत निर्मल होकर बच्चा नहीं बन जाता तब तक पूर्ण दया आती नहीं है। अहंकारी जीव बार-बार मार खाते चले जाता है समझता नहीं है, मैं अहंकार के कारण दुःख उठा रहा हूँ तकलीफ उठा रहा हूँ। यदि एकदम दीन हो जाए मिट्टी में मिल जाए तो कष्ट भी खत्म हो जाए।

ईश्वर अर्पित जीवन के गुण क्या हैं? मैं कुछ नहीं हूँ सब कुछ तू है। मेरा नहीं सब कुछ तेरा खेल है। मैं जो कुछ करता हूँ तू करता है मेरे हाथ में कुछ नहीं है। सब तेरी इच्छा से हो रहा है। ये ईश्वर अर्पित जीवन के गुण हैं। जब तक

हम अपने आपको कर्ता मानते हैं तब तक ही मार खाते हैं। जब हम गुरु दया से जान लेते हैं हम करने कराने वाले नहीं हैं करने कराने वाली माँ हैं तो हम बच जाते हैं। दूसरों को सुख देना अपने लिए कुछ न चाहना ये भी तो एक बड़ा भारी गुण है। ये सुखी रहें मुझे कुछ नहीं चाहिए, सदा दूसरों की भलाई में लगे रहना दूसरों की सेवा में लगे रहना सब जीवों की भलाई के लिए अपना सुख कुर्बान कर देना। अपने में ना रहना सदा ईश्वर की गोद में रहना। ईश्वर कर रहे हैं ऐसा भाव सदा रखना। ऐसा भाव रखकर चलोगे तभी कुछ बात बनेगी। पहले ये भाव दृढ़ करना। आसमान को पकड़ने की कोशिश कभी नहीं करना। सदा मिट्टी में मिलकर रहना। भगवान के दिए हुए दुःखों को खुशी से सहन करना अपने ही कर्म मान कर, कभी भगवान में दोष दृष्टि नहीं रखना। सदा भगवान की सेवा में लगे रहना। इन चीज़ों से जीव का उद्धार होता है। कल्याण होता है। भूलकर भी दूसरों की निन्दा नहीं करना चाहिए। अपने अवगुण देखने चाहिए। सदा सर्वदा जगत् के हित की सोचते रहना, किसी का न बुरा सोचना न बुरा चाहना तभी जीव का कल्याण होता है।

सेवा धर्म सब धर्मों में श्रेष्ठ है उनमें से भी सत् सेवा। सत् सेवा जो पूरे मन से करता है उसका उद्धार ही हो जाता है। जो अपने लिए जीता है वो स्वार्थी है। दाँत दिखा रहे हैं दाँत के अन्दर कीड़ा लगा दिखा रहे हैं। अन्दर ही अन्दर दाँत गलता जा रहा है। पर बाहर से वो ठीक दिखता है। ऐसे ही बाहर में स्वार्थी मनुष्य को लगता है कि मेरी हर चीज़ ठीक

है पर अन्दर ही अन्दर स्वार्थ का कीड़ा खाते जा रहा है। स्वार्थी आदमी किसी काम का नहीं है। जो अपने स्वार्थ के लिए दूसरों को कुचलता है दूसरों का हक छीनता है वो इस दाँत की तरह है। देखने में बड़ा सुन्दर पर अन्दर से पूरा खाया हुआ। इस सच्चाई को समझने का है। दिखा रहे हैं। दुनियाँ वाले बोल रहे हैं वाह-वाह कितना सुन्दर दाँत हैं। इस दाँत की वाह-वाह हो रही है जो अन्दर से बिल्कुल खाया जा चुका है। बिल्कुल सड़ चुका है। दूसरा दाँत दिखा रहे हैं। वो भी सड़ा हुआ है। अब वो सत्संग करके राम नाम लेकर भरते जा रहा है। उधर किसी की नज़र नहीं है। इसमें इतनी चमक दमक नहीं है। परंतु अन्दर में इसका जितना खोखलापन था वो त्याग वैराग और राम नाम इनसे भरते जा रहा है। त्याग वैराग और राम नाम इनसे अन्दर के खाए दाँत भरे जा रहे हैं। बाबा **Dental Surgeon** बन कर खड़े हैं और दाँत देख रहे हैं – या तो इसको निकाल देना पड़ेगा, बहुत सड़ा हुआ है नहीं तो त्याग वैराग और साधना के **injections** लगाने पड़ेंगे। तीनो इंजेक्शन्स भरे हुए दिखा रहे हैं। तीनों इन्जेक्शन्स सफेद रंग के दिखा रहे हैं। उसको इंजेक्शन्स दे रहे हैं। बहुत बड़ा इंजेक्शन है उसके ऊपर लिखा हुआ है त्याग। जैसे-जैसे उस इंजेक्शन को दाँत की जड़ों में दे रहे हैं वो दाँत भरते जा रहा है। वो कहता है दर्द तो काफी हुआ पर अब अच्छा लग रहा है। बाबा बोल रहे हैं – सुई है ना पहले तो तकलीफ होती है पर पीछे आराम मिलता है। कहता है अब चलूँ। कहते हैं नहीं एक इन्जेक्शन और लगाना है। उसके ऊपर लिखा हुआ

है वैराग। ये लगाएगा तो तेरे को और आराम हो जाएगा। बाबा वो लगाते हैं तो वो दर्द से चिल्लाता है सी-सी करता है। डर क्यों रहे हो पीड़ा तो उठानी ही पड़ती है। त्याग और वैराग धीरे-धीरे जीवन में आता है। बाबा धीरे-धीरे डोस (Dose) दे रहे हैं। जितना-जितना डोस दे रहे हैं उधर वो दाँत भरते जा रहा है। अब पूरा दे दिया। कहते हैं कैसा लग रहा है? कहता है – अब अच्छा लग रहा हैं। एक पुड़िया दे रहे हैं ये ले जा। अब बिल्कुल ठीक हो जाएगा अब कोई तकलीफ नहीं होगी। त्याग वैराग और साधना। इनसे दाँत मजबूत रहते हैं। छः विकारों को चबा डालते हैं। त्याग, वैराग और साधना अब जीवन में आ जाते हैं तो दाँत मजबूत हो जाते हैं। छः विकारों को चबा डालते हैं सदा हुक्म में रहना ये आध्यत्मिक स्वास्थ्य की निशानी है। हुक्म में बंधे हुए कुछ भी कार्य करना। अपनापन नहीं लाना। हुक्म का पालन करने के लिए जो भी तकलीफें आएँ उनको खुशी से सहन करना। ईश्वर के भक्तों का कभी अनादर नहीं करना भूल कर भी। जो प्राणी मेरे बच्चों का, मेरे भक्तों का अनादर करता है, वो मुझसे सहन ही नहीं होता। वो मुझसे देखा नहीं जाता है। जो मेरे बच्चों, मेरे भक्तों को दुःख देता है वो कल्याण मार्ग से गिर जाता है। अपनी करनी को भोगता है।

●●●

किसी का हो जा

जब जीव किसी का हो जाता है सच्चे मन से, तन-मन-धन से किसी का हो जाता है तो उसकी ज़िम्मेदारी हो जाती है जीव की रक्षा करने की। फिर सदा उसके भरोसे रहना चाहिए फिर कभी इधर-उधर नहीं देखना चाहिए इधर-उधर देखने से हानि होती है। उसने अपने को किसी के हवाले कर दिया तो फिर इधर-उधर क्यों देखना? इधर-उधर देखना हरजाई का काम है आज किसी की ओर, कल किसी की ओर, परसों किसी की ओर। जो एक दफा माँ का हो जाता है फिर माया का क्यों बनना? सुबह माँ का बनना, दिन में माया का बन जाना, शाम को फिर माँ का बन जाना। कभी इसको देखना कभी उसको देखना ये शरणागति है क्या? जिसके प्रति शरणागति है उस पर भरोसा नहीं है क्या? अब किसी और से बचाव की सूरत ढूँढना। हम बोलते हैं हमने शरणागत कर दिया है। जिसके प्रति शरणागत कर दिया है वो हमारे कर्म पूरे करवाता है। यदि वो कर्म पूरे करवाने लगे तो इधर उधर देखना किसी और से बचाने की सूरत ढूँढना जिसके प्रति शरणागत किया है, यदि वो हमारे कर्म पूरे कराने लगे हैं, तब हम उसको छोड़ कर दूसरों की ओर देखने लगते हैं, इधर-उधर देखने लगते हैं, मैं आपसे पूछता हूँ ये शरणागति है क्या? बाबा दीनदयाल तुम्हारा उद्धार करना चाहते हैं, वो कर्म पूरा कराने के लिए दुःख देते

हैं तो तुम किसी दूसरे को ढूँढते हो तुम्हारा उद्धार होगा क्या? जिसके शरणागत हैं उसी का भरोसा रखो जो कुछ वो कराए वो ही करना चाहिए इधर -उधर देखने की जरूरत नहीं है। करने कराने वाला वो ही है। जो कुछ मिलेगा उसी से मिलेगा। भगवान के रूप सब एक ही हैं। जो रूप हमने पकड़ लिया है वो रूप छोड़ कर फिर इधर-उधर भलती-भलती जगह नहीं देखना है। जब हम किसी का हाथ पकड़ते हैं तो उसकी ज़िम्मेदारी पूरी हो जाती है। उसकी ज़िम्मेदारी लेने के लिए कर्म पूरे कराने ही पड़ते हैं। उनके कर्म पूरे न हों तो हमारी ज़िम्मेदारी पूरी नहीं हो सकती है। कर्म जीव और ब्रह्म के बीच दीवार बन कर खड़े हैं। जब तक वो कर्म पूरे नहीं कराएंगे तब तक वो उस पार ब्रह्म में मिल नहीं सकते। इसीलिए इस बात को दृढ़ करना है, भूल कर भी इधर-उधर नहीं देखना है। जो कुछ हो रहा है तुम्हारे भले के लिए हो रहा है, उसी में तुम्हारा कल्याण है। भले ही उस पल उसको बड़ी तकलीफ हो रही हो पर ये ही तकलीफ आगे जाकर आनन्द का द्वार खोलती है। माँ से मिलन चाहते हो तो खुशी से अपना कर्म भोगते जाओ। किसी दिन आनंद माँ से मिलन की आनंद घड़ी आ जाएगी। माँ से मिलन हो जाएगा।

मैं जो कहता हूँ बड़े ध्यान से सुनो, समझो जिसका जीव एक बार हो जाता है फिर वो अपनी ज़िम्मेदारी समझता है उसकी रक्षा करने की, जब जीव दूसरी ओर देखना शुरु कर देता है तो फिर वो भी सोचता है उसकी ज़िम्मेदारी नहीं है, वो दूसरों की ओर देखता है। ऐसा हरगिज़ नहीं करना। रूप

तो सब मेरे हैं। जब तुम मेरे हवाले हो गए और जहाँ पर कष्ट आ गया तो तुमने दूसरों को देखना शुरु कर दिया। वो कष्ट वो कर्म तो मैंने दिए हैं तुम्हारा हित करने के लिए फिर तुम मेरा हाथ छोड़ कर दूसरों की ओर देखने लगे बचाव के लिए। तो बताओ मेरे मन पर क्या बीतती होगी? मैं कैसे तुमको पार करूँगा? मैं तो कहूँगा तुम्हारा प्रेम शून्य है, ज़ीरो है। तुम्हें भरोसा मुझ में नहीं है। इसमें जो हिलेगा वो गिर जाएगा डूब जाएगा। मैंने अपने बच्चों के लिए ही ये जगत् बनाया है। मैं कई बार बोल चुका हूँ मुझे अपने बच्चों से बहुत प्यार है। मुझसे बढ़ कर मेरे बच्चों की रक्षा करने वाला कौन है? श्री महाराज अपनी अमृत पावन पवित्र वाणी बोल रहे हैं – लोग अपने दुःख दर्द दूर कराने के लिए मेरे पास टिड्डियों की तरह आते जा रहे हैं, वो दूसरों की तरफ देखते हैं दूसरों से मेरा नाम सुनते हैं और मेरे पास दौड़े चले आते हैं। जो मेरे बच्चे हैं वो मेरे साथ चिमटे हुए हैं। तुम तो मेरे बच्चे हो मैं तुम्हें इतने दुःख में देख सकता हूँ क्या? मैं तुम्हारे कर्म पूरे कराता हूँ थोड़े-थोड़े में ही। थोड़े समय में थोड़ा कर्म देता हूँ बाकी मैं अपने ऊपर ले लेता हूँ। उस थोड़े में भी तुम मेरे से शिकायत करते हो तो मेरे पर क्या बीतती होगी। मुझसे दया की भीख मांगो। जो कुछ होना है मुझसे होना है। जो कुछ मिलना है मुझसे मिलना है और देखो इधर देखो मेरे कारज के अन्दर किसी दूसरे की शक्ति नहीं है दखल देने की। इस सृष्टि में तो क्या पूरे ब्रह्माण्ड में कोई भी मेरे कार्य में दखल नहीं दे सकता है। कोई एक भी दखल नहीं दे सकता। मेरा

कार्य पूरा होकर रहता है। फिर तुम क्यों बड़े बनते हो? जिसका हाथ पकड़ा है वो हाथ मज़बूती से पकड़ कर रखो। जो चरण पकड़े हैं वो चरण मजबूती से पकड़ो। कोई मेरे कार्य में दखल नहीं दे सकता। जिसका हाथ मैंने पकड़ा है उसको पार लगा कर ही छोडूंगा। जो नहीं चलेगा उसकी पिटाई करूँगा लेकिन उसको पार लगा कर ही छोडूंगा। मेरे नाम की खातिर पार लगाऊँगा। मेरा नाम तारक है, पतित पावन है। मैं जीवों को पार लगाने आया हूँ जिसका हाथ मैंने पकड़ा है उसको पार लगाए बिना छोड़ता नहीं। मेरा नाम बाबा साईंनाथ है। जो ईश्वर को छोड़ कर इधर-उधर देखता है वो गिर जाता है। भूले से भी अपने मन को इधर-उधर मत जाने दो। जो कुछ हो रहा है होने दो उसी में तुम्हारा भला है। जो कुछ हो रहा है उसी में तुम्हारा कल्याण है। सच्चे मन से बोलो – बाबा तेरी इच्छा पूर्ण हो, बाबा तेरा भाणा मीठा लागे। ये सबसे बड़ी दवाई है। ये सबसे बड़ी औषधी है। जो दुःख तकलीफ सौ दवाईयों से ठीक नहीं होती वो इस फार्मूले से ठीक होती है। दुःख तकलीफ के समय बोलना बाबा तेरी इच्छा पूर्ण हो ये सबसे बड़ा भजन है। दुःख तकलीफ के समय यही निकलता रहना चाहिए मेरे बाबा तेरी इच्छा पूर्ण हो। कौन ऐसी माँ है जो अपने बच्चे को दुःख में देखेगी। कर्म पूरे होने शुरु हो जाते हैं।

मैं जीवों का सच्चा हितैषी हूँ। मैं सदा उनके कल्याण की सोचता हूँ। बड़े-बड़े पापी, दुष्ट, अहंकारी मेरे चरण कमलों में आकर पार हो जाते हैं। मेरा काम ही है पतितों को पावन

करना। मेरा काम ही है पतितों को पार लगाना। तारक मेरा नाम है इस भव से पार लगाना मेरा काम है। जो अपने आपको शुद्ध मन से मेरे चरणों में डाल देता है, फिर अपना कोई हक नहीं समझता वो तर जाता है। सच्चा माँ का भजन ही यही है अपने आपको माँ के चरण कमलों में डाल देना। माँ का खेल देखते रहना। किसी चीज़ में अपनापन नहीं लाना। मारने वाले से बचाने वाले का हाथ बहुत बड़ा होता है। मारने वाला हाथ सौ बार उसे मारे, बचाने वाले का हाथ सौ बार उसे बचाएगा। मारने वाला क्या करेगा बचाने वाला उसकी एक नहीं सुनता है। मारने वाला लाख तरफ से आता है उसे मारने के लिए बचाने वाला लाख तरफ से आता है उसे बचाने के लिए। तू क्या करेगा ये मेरा बच्चा है। तू दूर रह, कोई इसका बाल भी बाका नहीं कर सकता। दूर रह! खबरदार! निकट आया तो गर्दन उड़ा दूंगा। खबरदार! निकट नहीं आना दूर रह मेरा बच्चा है। जानता नहीं है मेरा बच्चा है। ये मेरा खेल है मेरे बच्चे को काल भी हाथ नहीं लगा सकता है। अपने बच्चे को मैं अपनी गोद में लेकर जाता हूँ, काल के हाथ में नहीं देता, काल उनका कुछ भी बिगाड़ नहीं कर सकता। अगर उन पर कुछ कर्म भी आएँ तो मेरी इच्छा से आते हैं। उसके पिछले जन्मों के कर्म पूरे कराने के लिये, जो कर्म इस जन्म के लिये निश्चित किये गये हैं वो पूरे करवाने के लिये। जब तक कर्म पूरे नहीं होते वे मुझमें नहीं मिल सकते। मेरी रक्षा का हाथ उन पर रहता है। कर्म आते भी हैं तो मैं उनके साथ-साथ रहता हूँ कहीं ज्यादा कष्ट ना आ

जाये। कहीं ऐसा ना हो कि इनसे सहन ना हो, नाप-तोल कर देता हूँ बाकी मैं अपने ऊपर ले लेता हूँ। बच्चे मेरे हैं मैं बच्चों का हूँ। बच्चे के साथ मेरा नाता ऐसा है वो टूट नहीं सकता वो अटूट है। तुम सब मेरे बच्चे हो, तुम्हें हाथ पकड़ कर यहाँ पर लाया हूँ। ये जगह मेरी गोद है। यहाँ पर जो आता है उनकी रक्षा होती है। उसकी रक्षा बराबर होती ही है। मेरे जैसा दाता और कौन है? जमीन से आसमान तक पहुँचाना मेरा काम है। बड़े से छोटा करना छोटे से बड़ा करना भगवान का काम है। जो अहंकारी होता है उसको जमीन से लगाना पड़ता है। जो बच्चा बन गया है जमीन से लग गया है उसको मैं अपनी गोद में ले लेता हूँ। ये बात जिसकी समझ में आ गई तो जानो उसके कल्याण का समय आ गया है। कभी भूल कर भी गलतियों की तरफ मत देखो, मेरी तरफ देखो। मन भजन में लगाओ, पीछे मुड़ कर मत देखो, पीछे मुड़ कर देखने में तुम्हारी हानि है। मन माँ के चरणों में लीन होना चाहिये। ये विचार रहेगा तो तुम्हारा उद्धार हो जायेगा, कर्म थोड़े-थोड़े में पूरा हो जायेगा। जो मेरे भजन में मन लगाता है वो पार हो जाता है। फिजूल संसार की बातों में मत पड़ो। अपना समय बर्बाद मत करो। जो मेरा हो जाता है मैं उसका हो जाता हूँ। मैं रचना के पीछे से बोल रहा हूँ। सब रचना मेरे हाथ में है, मैं जैसे चाहूँ करूं। मैं रचना का मालिक हूँ, सर्व जगत् का रचैय्या हूँ, सदा मेरे ध्यान में डूबे रहो। अपने आपको मुझमें गुम करते रहो। अपने आपको मुझसे अलग नहीं मानो। मैं पूर्ण हूँ, अविनाशी हूँ, मेरा नाश

नहीं है। कोई मुझसे अलग नहीं है। पूर्ण में सब कुछ आ जाता है। पूर्ण से बाहर कोई नहीं रह सकता। तुम मुझसे बाहर नहीं हो, अलग नहीं हो, सदा मेरा अंश हो, मुझमें चलते-फिरते हो, मेरा कार्य करते हो, अन्त में मुझमें ही विलीन रहते हो। तुम्हारा शरीर छूटता है तब भी मुझमें विलीन रहते हो। दूसरा शरीर मिलता है तभी भी मुझमें विलीन रहते हो। जब किसी जन्म में मुझे तुम पर दया आ जाती है तो मैं अपने आप में विलीन कर देती हूँ। फिर भी बाहर नहीं रहते, मुझसे बाहर कुछ नहीं है। जो कुछ है मुझमें है, मेरे में है। जो ऐसा मनन करते हैं वो मुझमें मिल जाते हैं।

फिज़ूल बातों में समय जाया मत करो, सदा मेरे चिंतन में रहो। बात करो तो मेरी करो। सदा मेरे गुण गाओ भजन करो, सदा मेरी लीला सुनो और सुनाओ। मेरे नाम ने किसको पार नहीं लगाया। युग-युग से मेरा नाम ले-ले कर जीव पार हो गये। मैं ही राम हूँ, मैं ही कृष्ण हूँ, शंकर हूँ, दुर्गा हूँ, लक्ष्मी हूँ, महाकाली हूँ। युग-युग से जिसने मेरा नाम लिया वो पार हो गया। जिसने एक मेरा आधार लिया उस पर आपत्ति आई ही नहीं। जो आज एक मेरा आधार रखता है, दूसरे दिन दूसरे का, तीसरे दिन तीसरे का वो डूब जाता है। वो जन्म मरण की बाजी हार जाता है। जो कुछ करता हूँ मैं करता हूँ तुम्हारा नाम हो जाता है। करने कराने वाली आदि प्रकृति शक्ति मैं हूँ। मिट्टी का पुतला क्या कर सकता है? एक मुर्दे में क्या शक्ति है करने की?

ईश्वर के खेल में अपनी मर्ज़ी मत उठने दो। जैसे ईश्वर

चलाते जाएँ ऐसे चलते जाओ इसी में तुम्हारा कल्याण है। जो कुछ करो सोच समझ कर करो। जल्दबाजी में मत करो नहीं तो रोओगे। गलत काम कब होता है? जब हम सोचते हैं ईश्वर हमें नहीं देखते। ईश्वर हमारे हर कर्म को देखते हैं। ईश्वर के शब्द कभी गलत नहीं होते, ईश्वर की वाणी कभी गलत नहीं होती। जो होता है देखते जाओ। चलते जाओ जैसे मैं चलाते जाऊँ। सच्चाई, सिमरन और सेवा इसके बिना जीव का उद्धार नहीं हो सकता। तुम्हारा सबका उद्धार मैंने सेवा से करना है। लाखों नहीं करोड़ों का उद्धार मैं यहाँ से कर रहा हूँ।

सब फसाद "बनने" में है। आज तुम फैसला कर लो मिटना है तो सब गन्दगी निकल जायेगी। आज तक जिसने भी अपने को मिटाया नहीं उसका उद्धार नहीं हुआ। सेवा करो, सेवा करो, सेवा करो। सिमरन करो, अपने को मिटा कर – मैं कुछ भी नहीं हूँ। बाबा जो कुछ है सो तू है। एक तेरे सिवाय कुछ भी नहीं है। मिटाने में ही सब कुछ है। अपने अहम् को मिटाते जाओ। इसी में तुम्हारा उद्धार है। उद्धार उसी का होता है जो अपने को मिटा देता है। करने में कुछ फल मिल जाता है। लेकिन छुटने के लिये अपने को मिटाने की अत्यंत जरूरत है। अपने को मिटाये बिना उद्धार नहीं होता। जब तक हम अपने आपको मिटाते नहीं तब तक न अपनापन जाता है न कर्तापन जाता है। जो कुछ है ईश्वर का है। ईश्वर आप करने वाले हैं।

ॐ साईं सत् करतार करने वाला साईं आप है। जो साईं

के अर्पित होकर रहते हैं उससे पाप कर्म होते ही नहीं हैं। कर्मों में कर्तापन मत लाओ। जब तक हमारा कर्मों में कर्तापन है तब तक हम बागी है। जब हम दृढ़ कर लेते हैं सब कुछ आप हो, आप करने वाले हो, तब हम जन्म-मरण के चक्कर से छूट जाते हैं। अपने आपको कर्ता मत मानो। सफलता ईश्वर की है। हमने कुछ नहीं किया है। मैं ही मैं को छोड़ कर तू ही तू के अभ्यास में रहो। जो कुछ है सो तू है। मेरा कुछ भी नहीं है। जब जीव अपने को कर्ता मान कर ईश्वर की दी हुई सफलता को अपना लेता है और झूठा अहंकार खड़ा करना शुरु कर देता है वो चक्कर में पड़ जाता है। किसी भी चीज़ को अपनाओ नहीं। अध्यातम् में भी जिसको जो कुछ सफलता मिलती है वो मेरी देन है। हर जीव के जीवन में ऐसा समय आता है जब कहते हैं मन नहीं लगता वहाँ अंधेरी रात होती है। **Dark night of the Soul** लाख सिर पटक लें नाम ही नहीं लिया जाता। उस समय बचने का रास्ता एक ही है। सत्पुरुष की संगत। किसी सत्पुरुष की संगत करने से तुम इस अंधेरी रात से बच सकते हो। कर्मों का फल सहना ही पड़ता है। सुन तेरी करनी से दूसरे का भजन रुका होगा तभी तेरा मन नहीं लग रहा। जब तक ये कर्म पूरा नहीं होगा मैं भी तेरी मदद नहीं करूँगा। बोलते हैं – दरबार में आने को मन नहीं करता उल्टी शक्तियाँ नहीं आने देती। दरबार में आने से कर्म तो कटेगा। घर में बैठने से और उल्टे विचार उठेंगे। श्री भगवान का नाम-सत्संग कानों में पड़ेगा अपने आप सब ठीक हो जायेगा। हर एक

के ऊपर ये स्थिति आती है। सत्संग में ढील मत करो। जब कोई काला जादू करता है तो सबसे पहले भगवान के भजन में मन नहीं लगता। तो नाम लेते जाओ, नाम मत छोड़ो, नाम तुम्हारा कर्म काटेगा ही। नाम लेना, सत्संग करना, सत्संग में आना मत छोड़ो। मन नहीं लगता तो नाम को छोड़ो नहीं। नाम में मन नहीं लगता इसीलिये हम नाम लेना छोड़ देते हैं। उस समय नाम लेना नहीं छोड़ना, लगातार नाम लेते रहो। देखने वाला देख रहा है यह लगातार नाम ले रहा है। मन नहीं लग रहा तो दोष इसका नहीं है। कोई उल्टी शक्ति हमें नाम नहीं लेने दे रही। जब तक स्वास में स्वास चल रहा है तब तक नाम लेते जाओ।

मैंने तुम्हें अपना साथी बनाया है। मेरे काम में हाथ बटाओ। सुनी-अनसुनी कर दोगे तो बात नहीं बनेगी। ख़ुशी मेरे खेल में है। जगत् में नहीं है। देखो कैसे मैं लाखों का उद्धार कर रहा हूँ। कितने जीवों का उद्धार हो रहा है। तुमको सुन कर भी ख़ुशी नहीं होती। धन्य है तू बाबा साईं नाथ! धन्य है तेरा खेल! धन्य है तेरा खेल! उसमें आनंद लो। लाखों जीवों को आनंद मिल रहा है, लाखों जीवों का उद्धार हो रहा है। तुम्हारे गुरु कहते हैं धन्य है तू धन्य है तेरा खेल और धन्य हैं हम जिसको अपनी सेवा में लगाया हुआ है। आज दुनियाँ में इतना सुख कहाँ है। सुख केवल उनका होने में है, उनकी सेवा में है। हम अपने लिये कुछ नहीं चाहते। जगत् के सब प्राणी सुखी हों बस यही हमारी चाहत होनी चाहिए। इस बात को समझने का है।

यही भीख मांगत हैं तुझसे सदा।
साईं सबका भला हो सबका भला।।

जब प्राणी जगत् में पूजा पाठ करते हैं तो अपने लिये मांगते हैं। लेकिन जो अल्लाह के सच्चे बंदे हैं वो बंदगी करके, हाथ उठा कर प्रार्थना करते हैं – अल्लाह! सबका भला हो। जब जीव अपने को मिटा देता है, अपने को खतम कर देता है वो सब कुछ पा लेता है। एक भक्त ने पूछा बाबा कल्याण का मार्ग क्या है? तो बाबा बोले – अपने को मुझमें गुम कर देना। इससे बड़ी साधना कोई नहीं है। अपने को मिटा दो, अपने को गुम कर दो। हम कुछ नहीं हैं – हे साईं सब कुछ तुम हो। बच्चे बन जाओ। बच्चे को अपनी माँ के सिवाय कुछ नहीं होना। बड़े को ये भी होना वो भी होना। बच्चे को माँ के सिवाय कुछ नहीं होना। श्री महाराज बाबा साईंनाथ का रास्ता है – मुझमें गुम हो जाओ। कोई वासना मत रखो। बड़ों के मन में वासना होती है। बच्चे को कोई होश नहीं होती। बच्चे को माँ चाहिये। हर एक को बताना है बाबा साईंनाथ का रास्ता मिटने का रास्ता है कुछ बनने का नहीं।

●●●

सत् ज्ञान

माटी को वो आप चलाए
माटी से सब कर्म कराए।।
माटी में है आप समाए
माटी क्यों भरमाए।।

इन सीधे साधे शब्दों में वेद पुराण ही नहीं उससे भी परे का पूरा ज्ञान आ गया है। जो इन शब्दों में दिन-रात रहने का जतन करेगा वो पार हो जाएगा। उसको काल हाथ लगाने का भी जतन नहीं करेगा। जो चौबीसों घंटे इस अनुभव में रहेगा वो जीवनमुक्त है। इस बात को अच्छी तरह से समझने का है।

धर्म की रक्षा के लिए ये सुन्दर निर्मल पवित्र ज्ञान तुम सबको दे रहा हूँ। ताकि तुम जगत् में इसका प्रचार कर सको।

रास्ता साफ हैं अहंकार को त्यागो, बड़प्पन को त्यागो माँ मिल जाएगी। बच्चा बन कर रहो। बच्चे में ना बड़प्पन होता है ना झूठा अहम् होता है। बिगड़ी बनाने का दूसरा और कोई रास्ता नहीं है। भरमाने की कोई जगह नहीं है। जब तक मिट्टी में से झूठा अहंकार नहीं जाता तब तक ये चोला छूटने के बाद आगे मिट्टी के चोले तैयार रखे हैं। जब तक मिट्टी में मिल नहीं जाओगे तब तक कोई छुड़ा नहीं सकता। आज तक दुनियाँ में कोई पैदा नहीं हुआ जो अहंकारी जीव को छुड़ा सके। ये हुआ नहीं कि even ईश्वर

ने भी किसी अहंकारी जीव को पार किया हो। ईश्वर ने जिसको पार करना होता है उसका पूरा अहंकार ले लेते हैं। मिट्टी में मिला लेते हैं फिर पार करते हैं। अहंकार उठाया अपने को दूसरों से ऊँचा कुछ जाना तो फिर ये सब चोले तैयार पड़े हैं। गुमनाम रहने में जो आनन्द हैं वो दुनियाँ में नाम कमाने में, नाम कराने में नहीं है। गुमनाम सेवा करने में जो आनन्द है वो दुनियाँ में डंका बजा कर करने में नहीं है। जिसके अन्दर माँ की दया है वो अपना नाम बाहर आने नहीं देता। बाहर आना मतलब अपना नाम करना। सच्चाई क्या है? ये ग्रन्थ मुझ पूर्ण परमेश्वर के लिखे हैं। खेल मेरा है बच्चे का नहीं हैं। फिर नाम काहे का? ईश्वर अपना खेल जानते हैं गुमनाम सेवा हो रही है तो अहंकार की कोई जगह ही नहीं है। मेरे बच्चे आगे आना नहीं चाहते। वो तो च्यूंटी बन कर रहना चाहते हैं। वो जानते हैं सब ईश्वर का खेल है। फिर ये अहंकार काहे का? फिर क्यों झूठा अहंकार उठाया जाए? अर्पित जीव की निशानी ही ये ही है। वो अपने लिए न मान चाहता है, न इज्जत चाहता है, वो केवल माँ को चाहता है। माँ के बिना कुछ नहीं चाहता। आज मैं जो ज्ञान आप सबको दे रहा हूँ। वो बड़ा ऊँचा ज्ञान है। इस अहंकार में ही सारी दुनियाँ मारी जा रही है। आज जगत् में से ये अहंकार चला जाए तो सारी दुनियाँ ही खाली हो जाए। अहंकार जीव के अन्दर नहीं है तो पैसों का ढेर जमा करने की जरूरत ही क्या है। जो बड़ा बनना ही नहीं चाहता वो पैसों के ढेर की तरफ देखता नहीं है। मैंने क्या करना है जब

मुझे चाहिए ही नहीं कुछ माँ के सिवाय। अहंकार नहीं है तो बहुत बड़े-बड़े महलों में रहने की जरूरत क्या है? अहंकार नहीं हैं तो एक छोटे से कमरे में ही गुजारा हो जाता है। अहंकार नहीं है तो इस शरीर को सजाने की जरूरत क्या है? अहंकार नहीं है तो इतने लंबे-चौड़े खाने की भी क्या जरूरत है। इसी अहंकार ने जीव को चौरासी में डाल रखा है। इसी अहंकार के कारण जीव चौरासी के दुःख उठाता है, मैं बड़ा बन जाऊँ। आज हर कोई तुमसे भी और पूरे जगत् में से भी हर किसी की वृत्तियाँ बड़ा बनने में लगी हुई हैं। बड़ा बनना मतलब चौरासी की तैयारी। संसार में एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक हर कोई अंधकार में घूम रहा है। सब बड़ा बनना चाहते हैं। मिट्टी में कोई मिलना नहीं चाहता। इस अंधकार को कोई खत्म नहीं करना चाहता। जिसमें सरलता और दीनता भरी हुई है। इधर कोई चलना ही नहीं चाहता। आज एक है तो कल सौ हो जाए। कल सौ है तो परसों हजार हो जाए। जो साधारण बन कर रहता है दूसरे से अपने को नीचा जानता है, जख़ीरा नहीं करता, धन-दौलत जमा नहीं करता, बड़े-बड़े महल नहीं बनाता, अपने आराम के लिए आगे नौकर-चाकर, मोटर-गाड़ियाँ, ऐशो-इशरत का सामान जो जमा नहीं करता केवल वो ही अध्यातम् में चल सकता है। झूठ, छल, कपट, चोरी इनके बिना लाखों रुपये जमा नहीं हो सकते ना मौज-मजे के समान जमा हो सकते हैं। साधारण जीवन व्यतीत करो। साधारण बन कर रहो। गुमनाम बन कर रहो। दुनियाँ में नाम कमाने की कोशिश

मत करो। ये सच्चा निर्मल ज्ञान है, इसको हर रोज़ पढ़ो। दिन में दस बार पढ़ो, पचास बार पढ़ो। यदि तुम अपना कल्याण चाहते हो तो। ये तुम हर रोज़ पढ़ोगे तो कभी भटकोगे नहीं। ये तीनों लोकों को पावन करने वाला कोटि सूर्यों के समान चमकने वाला ये सुन्दर ज्ञान मैंने तुमको दिया है। ये ज्ञान वेद, शास्त्रों, धर्मग्रन्थों के परे का है। इस पर जो सच्चे मन से अमल करेगा वो पार हो जाएगा। ये ज्ञान मैं अपनी सबसे प्रिय आत्माओं को देता हूँ। हर रोज इसको पढ़ना चाहिए और अपना जीवन इसमें ढालना चाहिये। तभी यहाँ आने का फायदा है। नहीं तो कुछ फायदा नहीं है। समझने का है। इस ज्ञान को जो हर रोज़ भक्तिभाव के साथ पढ़ेगा वो मेरी पूर्ण दया को प्राप्त होगा। ऐसे श्री महाराज अपनी अपार दया से आज्ञा दे रहे हैं। ये ज्ञान नहीं है ये ज्ञान अमृत है। मैंने सब वेद शास्त्रों और उससे भी परे जो ग्रन्थ हैं वाणी है सबका निचोड़ आज के इस प्रवचन में दिया है। जो ये अमृत पिएगा वो अमर हो जाएगा।

●●●

तेरी इच्छा पूर्ण हो

ईश्वरीय इच्छा के आगे सिर झुका देना इससे बड़ी साधना और कोई मैं नहीं समझता। भले मन लगे या ना लगे। यदि हम खुशी से अपने कर्म पूरे कर रहे हैं तो वो भी बहुत बड़ी साधना है। जब कोई भी प्राणी खुशी से ईश्वर के दिये हुए दुःखों को भोगता है तो ईश्वर की इच्छा होती

है पूरी की पूरी दया इस पर उंडेल दूँ। तेरी इच्छा पूर्ण हो इस जैसी ना कोई साधना बनी है न बनेगी। अन्त में ये साधना कराई जाती है। मनुष्य के लिए निकलना मुश्किल है जब तक ईश्वरी शक्ति साथ न दे। मनुष्य की शक्ति नहीं है इस में से निकलने की। एक तिनका भी हिलता है उसके पीछे मेरी इच्छा है। चेतना तो एक ही है। चेतना के बिना जड़ कुछ नहीं कर सकती। कर्म भोगते-भोगते जीव निरअहम् हो जाता है, दीन हो जाता है। जब सब आसरे छूट जाते हैं तो एक मेरा आधार रह जाता है, एक मेरा आसरा रह जाता है। बस उसी स्थिति में पहुँचना है। कर्म बड़ा काम करते हैं, मन की गति को बदल देते हैं। जगत् में ईश्वर के सिवाय कौन काम आ सकता है? कर्म की गति कितनी बलवान है। कर्म की गति को कोई रोक नहीं सकता है। जगत् में एक ईश्वर के सिवाय कौन काम आ सकता है, धन-दौलत, रिश्तेदार, बाल बच्चे कौन सी चीज़ काम आ सकती है। तो कर्म भोग बड़ा भारी काम करता है। अन्दर की आँखे खुल जाती हैं। उसको साफ दिखने लगता है कि ईश्वर के बिना मेरा कोई नहीं है। जब ये बात समझ में आ जाती है तो जीव विरक्त हो जाता है। जब दुःख भोगते हुए देखता है कि मैं दिन रात कर्म भोग रहा हूँ इस समय कौन मेरे काम आ रहा है। और आ भी कौन सकता है? ईश्वर ही हाथ देकर मुझे बार-बार बचाते हैं। ईश्वर ही हाथ देकर बार-बार मेरी रक्षा करते हैं दूसरा और कोई नहीं बचा सकता है। **That state of helplessness must come.**

वो निरअहम् की स्थिति पहले आनी लाज़मी है इससे पहले कि साईं दया की बाढ़ आ जाए। जब तक जीव समझता है मैं कुछ कर सकता हूँ तब तक वो माया के चक्कर में है, कलयुग के फेर में है। वो स्थिति जब आ जाती है, अपनापन निकल जाता है तो दिन-रात ख्याल आता रहता है कि जब मुझे मेरे कर्मों से दिन-रात दुःख उठाना पड़ रहा है तो दूसरों को भी उठाना पड़ेगा। बाबा दूसरों को समझ दो ताकि दूसरे तो कम से कम अपने को आग न लगाएँ। जितना भयानक कर्म उतनी ही कर्मों की गति तेज। मन, बुद्धि, शरीर कर्मों की अग्नि में जल रहा होता है। इस स्थिति में अन्त में सबको गुजरना पड़ता है नहीं तो पार नहीं हो सकते। कुदरत का नियम टूट नहीं सकता है कर्म का फल भोगना ही पड़ता है। नहीं तो पार नहीं हो सकते।

"कर्म अगन में जल रहा सारा ही संसार"

जिधर देखो दुःख ही दुःख है। जैसे-जैसे वासनाएँ बढ़ती चली जा रही हैं ऐसे-ऐसे दुःख भी बढ़ते जा रहा है। मानव जन्म में सबसे अनमोल वस्तु क्या है? आत्मा को बचाना। जिसने अपनी आत्मा को बचा लिया वो बच गया। अपनी आत्मा को बचा कर रखना। अपनी आत्मा को बेचना नहीं है। आत्मा बिक गई तुम सारा दिन माला घुमाते रहो दान करते रहो, सेवा करते रहो आत्मा अगर बिकी हुई है तो मैं कुछ देखने वाला नहीं हूँ। नरक अग्नि में डालकर ही छोड़ूंगा। दुनियाँ सब मेरी मुट्ठी में है। ऐसे मानव को अपने हाथ से नरक में डालूँगा। आत्मा बचा कर रखी कि नहीं, कहीं आत्मा को

तो नहीं बेच दिया। ये ही अध्यातम् है ये ही धर्म है। इसके बिना मैं कुछ अध्यातम् जानता नहीं, कोई धर्म जानता नहीं। जो आत्मा बचा कर रखता है वो मुझ पूर्ण में मिल कर पूर्ण हो जाता है। जो आत्मा बेच डालता है, उसके जीवन में सदा के लिए अंधकार आ जाता है। रोशनी आत्मा में दी जाती है और आत्मा को ही चार पैसों के लिए बेच दिया तो सदा के लिए अन्धकार हो जाता है। अन्धकार क्या है? नौ महीने का गर्भ। बार-बार गर्भ में डलते जाओ। गर्भ में प्रकाश नहीं पहुंचता है। अन्धेरे में ही रहते जाओ। इन चीज़ों को समझने का है।

ईश्वरी नियमों को ना थर्मामीटर तोड़ सकता है ना डॉक्टर तोड़ सकता है ना दवाईयाँ तोड़ सकती हैं। इनको बोलो स्वास-स्वास से राम नाम का स्मरण करें अपने आप ताप कम हो जायेगा। हम पाप करते हैं क्योंकि हम चार दिनों के जीवन को ही सब कुछ मान लेते हैं। चार दिनों के बाद हमें भी चिता में जलाया जाएगा फिर ये सब किसलिए? ये सोचना लाज़मी है। अपने मन को हम वो दृश्य देखने ही नहीं देते, देखने देते तो हम ये कर्म नहीं करते। जिसने आत्मा नहीं बेची उसके अन्दर आत्मा का प्रकाश चले गया। जिसने आत्मा बेच दी उसके अन्दर धुप अन्धेरा दिखा रहे हैं। अपनी आत्मा नहीं बेचना, रूखी-सूखी खा लेना। दुःख पर दुःख, तकलीफ पर तकलीफ, कष्ट पर कष्ट आ रहे हैं तो सब जीव घबरा रहे हैं। अन्दर से आवाज आ रही है आत्मा को तो नहीं बेचा ना? खुशी की चीज़ है आनन्द की चीज़ है। शरीर के

ऊपर कष्ट आ रहे हैं ना। आत्मा को बेच कर संसारी सुख खरीद लेना उसमें कौन सी अकलमंदी है? ये सबसे बड़ा अज्ञान है ये सबसे घोर अज्ञान है।

संसार का मौज-मजा आत्मा को बेचे बिना नहीं खरीद सकते। आत्मा को गिरवी रखोगे तो संसार का मौज-मजा मिलेगा तक तक नहीं मिलेगा।

साधना उसी को फल देती है जिसका जीवन निष्पाप है, ईश्वर उसी को मिलते हैं जो ईश्वर के लिए कुर्बानी करता है जो वासनाओं का मुकाबला करता है। जो जगत् का है, जो पाप कर्म किया है, झूठ कर्म किया है तो ईश्वर से दूर हो जाएगा।

झूठ समान कोई पाप नहीं सच समान कोई पुण्य नहीं सच को छोड़ा तो कल्याण छोड़ दिया। जो दीखै सो सकल बिनासै।। गुरु अमरदेवजी की वाणी है। फिर उसके पीछे दौड़ना क्यों? कर्म भोग से डरो नहीं। यदि तुम सच्चे मन से मेरे अर्पित हो तो मेरा कर्तव्य है बार-बार तुम्हें कर्म अग्नि से निकालना। तुम अर्पित होकर मेरा भजन करो। कर्म आते जाएँगे मैं निकालता जाऊँगा। एक ही काम करो सेवा के कार्य में मेरा हाथ बँटाओ। जगत् को इस समय मेरी वाणी की बड़ी भारी जरूरत है। जब वाणी हो रही होती है तो दुनियाँ को भूल जाओ। जन्म-मरण का मसला हल हो रहा है उधर ख्याल करो। दूसरों की खुशी के लिए, दूसरों के सुख के लिए अपने सुख का बलिदान जब तक जीव नहीं करता तब तक कार्य नहीं हो सकता है। अपने शरीर का अपने सुख-

दुःख का क्यों सोचता है? ईश्वर सत्संकल्प हैं। ईश्वर का जो संकल्प होता है वो पूरा होकर रहता है।

मैंने ये दरबार पार लगाने के लिए लगाया है, धन-दौलत बढ़ाने के लिए नहीं। तुम या तो अपनी आत्मा की उन्नति कर सकते हो या धन दौलत बढ़ा सकते हो। शिष्य की जितनी ज्यादा संसारी वासनाएँ उतना ज्यादा जबरदस्त गुरु के ऊपर बोझा। अपने गुरु की तरफ हर एक ने अपनी जिम्मेदारी निभानी है।

वासनाएँ ही जीव को धरती पर रखती हैं। वासनाओं से उठे बिना जीव का उद्धार नहीं हो सकता है। जब तक वासनाएँ हैं तब तक उड़ नहीं सकते हैं। वासनाएँ हमें उड़ने नहीं देती हैं। जमीन से लगाकर रखती हैं। जब तक वासना रहित नहीं होते तब तक उड़ नहीं सकते। इस बात को अच्छी तरह से समझने का है।

हमने दाता से क्या भीख माँगना है थोड़ा और समझने की ज़रूरत है। पराशिव का खेल, अन्तरंग में पराशिव का नृत्य। तो दाता से हमने माँगना क्या है, कि हे दाता हमें ऐसी सच्ची समझ दे कि इस जगत् में जो कुछ भी हो रहा है हम उसको तुम्हारा नृत्य करके देखें और आनन्द मनाएँ। हर बात में आनन्द मनाएँ। जब ये उसकी लीला भूमि है और जो कुछ हो रहा है उसका नृत्य हो रहा है। तो दुःख है कहाँ? बुरा है कहाँ? दाता से भीख माँगनी है कि हम सुख और दुःख की भावना से परे चले जाएँ। अच्छे और बुरे की भावना से परे चले जाएँ। हे दाता जब तेरा नृत्य ही हो रहा है चारों ओर

तो फिर बुरा क्या है, खराब क्या है, दुःख काहे को मनाना। सुबह भी हमने बोला नृत्य करने वाला रहता कहाँ है? शमशान भूमि में जा कर रहता है। उसका वास कहाँ है? शमशान भूमि में। तो शमशान में भी जाकर हमने दुःख नहीं देखना है वहाँ भी आनन्द मनाना है। संसार में दुःख की जगह ही नहीं है। हमारी मनुष्य बुद्धि अपनी कल्पना से दुःख मना रही है। दुःख की जगह नहीं है। उसका खेल तो आनन्दमय है। उसका विधान उसकी विधि आनन्दमय है। जब हम अपनापन डाल लेते हैं किसी चीज़ में, उसी पल दुःख का बीज शुरु हो जाता है। हमारे लिए दुःख का बीज बोया जाता है। अपनापन हम नहीं लायें तो दुःख कहाँ है? नटराज का नृत्य हो रहा है चौबीसों घण्टे। टिकट खर्च कर जाकर देखते हो आनन्द मनाते हो इस में क्यों नहीं आनन्द मनाते। खाली इसमें अपनापन ले आते हैं। अपनेपन को निकाल दो। देखो कितना सुन्दर नृत्य हो रहा है। आनन्द लेने की चीज़ है। तो इसको समझना है हमने संसार की हर चीज़ में आनन्द मनाना है, हर विचार में आनन्द मनाना है। दाता से यही माँगना है। हमने यही भीख माँगनी है कि हम सुख-दुःख की भावना से परे चले जाएँ, अच्छे और बुरे की भावना से परे चले जाएँ। शरणागति है क्या? जब तक अच्छा और बुरा दिख रहा है अभी तक हम शरणागत नहीं हुए। पूर्ण शरणागति में बुरा नाम की कोई चीज़ रहती ही नहीं। बुरा नाम की चीज़ हमारी dictionary से सदा के लिए निकल जाती है। तो ये भीख माँगनी है।

●●●

सच्चा प्यार

एक ही चीज़ बाबा तुमसे माँगते हैं – सच्चा प्यार। यदि तुम सच्चा प्यार दे सकते हो तो बाबा तुम्हें अपने में मिलाने के लिए तैयार हैं। प्यार की पवित्रता को कायम रखो। प्यार में मिलावट न आने दो। इतनी वाणी सुनने के बाद यदि अब भी तुम्हें यह चाहिए, वह चाहिए तो तुमने बाबा की मेहनत बर्बाद कर दिया। यदि कुछ भी नहीं चाहिए तेरे सिवाय, तो यह है रास्ता पार होने का। लाख साधना भी कर लो, जब तक भक्ति सच्ची और निष्काम नहीं होगी बात नहीं बनेगी। दृढ़ करो बाबा तेरे सिवाय कुछ नहीं चाहिए। जगत् में रहते हैं तो यह चाहिए – वह चाहिए। अध्यातम् में आना मतलब इसको खत्म करना। दिन-रात सच्चे मन से पुकार करते जाओ तेरे बिना कुछ नहीं चाहिए। यदि यह कर सकोगे तो बाबा बच्चा बना कर गोद में ले लेंगे। तुम्हारी सब जिम्मेदारियाँ भी ले लेंगे। ऐसे जीव के पार होने में रत्ती भर भी शक नहीं होगा। भले ही उस जीव ने कितनी भी गल्तियाँ क्यों न की हों। यदि तुम सच्चे साधक हो तो दिन-रात पूछा करो कि कौन-सी ऐसी साधना है जिससे अपने बाबा को प्रिय लगे। और बाबा को सबसे प्रिय है उनकी इच्छा में रहना। जो मानव चोला पाकर एक बाबा के सिवाय कुछ नहीं चाहता, वह मानव जाति का भूषण है। अध्यातम् में जो कोई कुछ भी चढ़ाता है बिना किसी चाहत के वो सब कुछ पा

लेता है। उसे सब कुछ मिल जाता है। जो कुछ भी नहीं चाहता वह बिना चाहे सब कुछ पा लेता है। माँ अपने बच्चों की जरूरतें पूरी नहीं करेगी तो किसकी करेगी।

मुट्ठी साईं नाथ की चलती-चलती जाए।
भक्तों की रक्षा करे दुष्टों को मार गिराए।।

यह मुट्ठी भक्तों के साथ चलती है। जितनी जरूरत होती है उतना देती जाती है। मुट्ठी को अनुभव करो। हम सोचते हैं हम अपना कार्य करते हैं। हम अपने बाजुबल का कमाया खाते हैं। यह अपनापन उठाना है। हर कोई मुक्कदर का दिया खाता है। इस मुट्ठी के आसरे रहना सीखोगे तो फिर कमी काहे की। मुट्ठी फेल नहीं होती। मनुष्य की बुद्धि, मनुष्य की लम्बी चौड़ी स्कीमें फेल हो जाती हैं। मुट्ठी बराबर काम करती चली जाती है। मुट्ठी के आसरे, तजुर्बे के लिये थोड़ी देर रह कर तो देखो। क्या कमी दिखती है? जिन्होंने इस मुट्ठी का आसरा लिया रोते-रोते उनके जीवन में खुशी आ गई। यह मुट्ठी कोटि-ब्रह्माण्डों की पालना कर रही है। यह मुट्ठी तुम्हारे साथ-साथ चलती है जन्म से आखिर तक। ध्यान में बैठ कर मुट्ठी को देखा करो। कैसे कोटि-ब्रह्माण्डों की पालना कर रही है। इससे पावन हो जाओगे अध्यातम् में भी मुट्ठी देखो। भक्ति बाबा की देन है। जीव भक्ति नहीं कर सकता। बाबा की दया के बिना तुम एक बार भी नाम नहीं ले सकते। इसीलिये जीव भक्तों से, संतो से नाम दान माँगते हैं। तुम भी प्रार्थना करो – हे बाबा! नाम दान दो। बाबा भक्ति से जल्दी प्रसन्न होते हैं। भक्ति संत जनों गुरु जनों का प्रशाद है। भक्ति उनकी

देन है। बिना कृपा से भक्ति मिल नहीं सकती। दिन भर नाम दान की भीख मांगो। यदि चौबीसों घण्टे नाम चलने लग गया तो बाकी चीज़ें अपने आप दौड़ी चली आएँगी। जिस दिन तुम बोल सकोगे कि मेरा हृदय फाड़ कर देख लो कि तेरे सिवाय और कोई भी नहीं है, उसी पल तुम पार हो। भले ही मानव चोला रह जाए कर्म पूरे करवाने के लिये। भगवान प्यार के भूखे हैं। सच्चे प्यार से जीव उनको जीत लेता है और किसी साधना से नहीं। सच्चे प्यार से वह अपने आपको बंधवा लेते हैं। भगवान दातात्रेय जी की वाणी है "मैं पार तो लगा देता हूँ लेकिन अपनी भक्ति आसानी से नहीं देता। कौन किसी का गुलाम बनना चाहता है।" जब मेरा भक्त दिन-रात मेरे लिये तड़पता है तो मैं सोचता हूँ कि मैं अपना आप भी दे डालूँ तो भी काफी नहीं है। जो हमारे साथ प्रेम करके हमसे कुछ नहीं माँगता वह हमें दुःखी कर देता है। हम उसको एक पल के लिये भी नहीं छोड़ सकते। बच्चा है कहीं हानि ना हो जाए। यह सब वाणी सुन कर भी यदि हम दुःखी रहते हैं तो मतलब हमारे विश्वास में कमी है। क्यों न हम सच्ची भक्ति करें। आज जगत् में या तो बहुत जीव दुःखी है या दुःख भोगने की तैयारी कर रहे हैं। जितनी जरूरत है उतना कमाओ, उतना रखो। जो तेरे काम आने का नहीं है उसको रख कर क्या करोगे। फकीरों का बच्चा महलों का ख्वाब देखता है। फकीरी में रह। तू सौदेबाज़ है या बच्चा है। हर कर्म करते सोचना है कि इस कर्म से उनकी खुशी मिलेगी या खुशी चली जाएगी । दुनियाँ की परवाह मत करो। दुनियाँ

को खुश करने की कोशिश नहीं करना। बेधड़क होकर सच्चाई बोलना। सच्चाई दब कर कभी नहीं बोलना। मेरे बच्चे सच्चाई बोलने से कभी घबराते नहीं। लोग गाली दें, नाराज हों, पत्थर भी मारें वह सच्चाई बोलने से बाज़ नहीं आते। उसी में जीवों का कल्याण है। यदि दबी ज़बान में बोलोगे तो उसमें जीवों का कल्याण नहीं। शक्ति माँ किससे डरे और क्यों डरे। शक्ति माँ को अपने लिये कुछ नहीं चाहिये। दूसरों के उद्धार और सुख के लिये बोलती हैं। वाणी के एक-एक शब्द में ईश्वरीय सत्ता है। जीव को मोह-माया की निंद्रा से जगा देती है। चार दिन के लिये आया है सराय की फिकर में लगा रहता है। सारा दिन सराय को सजाने में लगा रहता है। सराय को ही सब कुछ समझ लिया और सच्चे घर को भूल गया। अपने गुरु के बताये हुए रास्ते पर दृढ़ता से चलो।

फकीर सिखाता है फकीरी में रहो। जब तक सच्चा त्याग, सच्चा वैराग नहीं आयेगा जीव पार नहीं हो सकता। किसी की देन को अपना कर झूठा अहंकार उठाते जा रहा है। इच्छा में रहना ही अध्यातम् है। अपनी आत्मा को साईं सर्व आत्मा में चढ़ा दो। तेरी इच्छा पूरण हो ताकि कोई कशमकश न रह जाए। सबसे ऊँची करनी क्या है? ये जान लेना कि मैं कुछ भी नहीं हूँ। जीव ध्यान नहीं कर सकता। यदि तुम पल-पल इच्छा में रह रहे हो तो यह एक प्रकार का ध्यान कर रहे हो। जो इच्छा में नहीं रहता, वासनाएँ उठाता है, जिसको ये चाहिये, वो चाहिये, मन उसको उठा कर एक पल में बाहर फैंकेगा। ध्यान करने के लिये जीवन चाहिये।

मन वासना का सहारा लेकर बाहर आ जाएगा। ईश्वर को पाने के लिये तैयारी चाहिये। तैयारी क्या है? तुम उसके हो जाओ दुनियाँ के नहीं रहो। पार हो जाओगे। शुद्ध अंतःकरण से बोलना चाहिये कि मुझे तेरे सिवाय कुछ नहीं चाहिये। रोटी का एक टुकड़ा मिले या दो टुकड़े मिलें, दो कपड़े मिलें या चार कपड़े मिलें तेरा शुक्र है। कोई दुःख तकलीफ या कष्ट आये जो भी वह दें उसमें शुक्र मनाओ। तेरी हर देन मंजूर है। यह अध्यातम् है। बिक जाओ बाबा साईंनाथ के नाम पर। फिर देखो क्या होता है। बाबा के दीवाने दुनियाँ की परवाह नहीं करते। उनकी पूरी दृष्टि दिन-रात बाबा में लगी रहती है कि कैसे तुझमें समा जाएँ। क्यों रे! साईंनाथ का दीवाना बनना है या दुनियाँ का दीवाना बनना है। जो साईंनाथ का दीवाना बनता है वो फटा पुराना पहनता है दुनियाँ का दीवाना बनेगा उसे सब कुछ तो मिल जायेगा साईंनाथ नहीं मिलेगा। साईंनाथ नहीं मिला तो जो कुछ मिला है वह सब ख़ाक है। बाबा मिल गये तो सब कुछ मिल गया। रहने से बात बनती है खाली बातों से नहीं। बाबा कहते है – "यदि मुड़ कर भी आना है तो मेरे साथ आना, अकेले नहीं आना, मर जाएगा। जो अकेले आये हुये हैं वो अपने को भी जला रहे हैं, दुनियाँ को भी जला रहे हैं। भगत मेरे लिए तड़पता है, मैं भगत के लिए तड़पता हूँ। मैं उससे अलग नहीं रहना चाहता हे नारद! यदि तू मुझे ढूँढना चाहता है तो तीरथ और मन्दिरों में मुझे मत ढूँढ। बैकुंठ में भी मेरा मन नहीं लगता। तू मुझे मेरे भक्त के आँसुओं में देख। वहाँ मेरा

बास रहता है क्योंकि मेरे भक्त को सौदेबाजी नहीं माँ चाहिए। यदि तुम बच्चे बन जाओगे तो पार हो जाओगे। यदि बड़े बन जाओगे तो चौरासी में चले जाओगे। बड़े-बड़े बादशाह मिट्टी में मिल गए। कोई जानता भी नहीं। भक्तों की कथा गा-गा कर लोग अभी भी आनन्द मनाते है। पूरन को पाने के लिए अपूरन को त्यागना पड़ता है। अपूरन को छाती से लगा कर रखेगा तो पूरन नहीं मिलेगा। अरे! काहे अपूरन का दीवाना बन कर रोता रहता है। इस अपूरन के पीछे अंतरंग में पूरन मुस्कुरा रहा है। वही तेरी मंजिल है। पाना है तो पूरन को पा। अपूरन तो शमशानी है। सच्चाई से भागने की कोशिश मत कर।

●●●

गुरु दीक्षा

दीक्षा का अर्थ समझते हो? दीक्षा का अर्थ ये है कि इस पल से मैं किसी का हो गया हूँ। अब जगत् का मेरे ऊपर कोई अधिकार नहीं है। जिसका हो गया हूँ उसकी इच्छा में मैंने अपना पूरा समय व्यतीत करना है जितना भी बाकी जीवन बचा है। यदि मैं जिसका हो गया हूँ उसकी इच्छा में मैंने बाकी जीवन व्यतीत नहीं किया तो हम यहाँ भी गुनहगार हैं और आगे भी गुनहगार हैं। ये है दीक्षा का अर्थ। जितने भी लड़के-लड़कियों ने दीक्षा लिया है हर एक को ये समझने की जरूरत है यदि उन्होंने गुरु-आज्ञा का उलंघन किया तो वो यहाँ भी गुनहगार होंगे और आगे जाकर भी

गुनहगार होंगे। जिस पल उन्होंने दीक्षा लिया तभी से उनका जीवन मेरे अर्पित हो गया, उन्होंने अपने आप को मेरे अर्पित कर दिया अब संसार का, जगत् का उनके ऊपर कोई हक नहीं है। जैसे मैं उनको संसार में रखूं वैसे उनको रहना है। अब वो मेरे हुक्म को, मेरी इच्छा को तोड़ नहीं सकते। दीक्षा का बड़ा भारी **Discipline** होता है। दीक्षा लेना बड़ा आसान है पर उसका पालन करना बहुत मुश्किल चीज़ है। दीक्षा बहुत सोच समझ कर लेनी चाहिए और बहुत सोच समझ कर देनी चाहिए। दीक्षा लेकर फिर मेरे हुक्म का, मेरी इच्छा का पालन नहीं किया तो जीव बहुत बड़ा भारी अपराधी हो जाता है। दीक्षा का अर्थ समझना है जो इस अर्थ को जान कर दीक्षा लेता है और फिर अपना जीवन मेरे अर्पित कर देता है उसका उद्धार हो जाता है। जिसको मैं दीक्षा देता हूँ वो मेरा अपना हो जाता है। उसके उद्धार की मुझे हर पल फिक्र रहती है। परन्तु जब वो मेरी आज्ञा को तोड़ता है तब मुझे बहुत धक्का लगता है। इस सच्चाई को समझना है। दीक्षा लेने से बड़ी भारी मदद भी मिलती है जीवन उठ जाता है। हमारा उद्धार हो जाता है परन्तु दीक्षा लेकर यदि हुक्म का पालन नहीं करते हैं तो उल्टा गुनहगार हो जाते हैं। यह समझना है कि दीक्षा बहुत ही उत्तम चीज़ है परन्तु इससे हानि होने का भी डर है। जो कच्चे धागे हैं जो सच्चे मन से मेरी ओर नहीं चल सकते उनको दीक्षा लेने की जल्दी नहीं करनी चाहिए। दीक्षा देकर मैं सबके जीवन में परिवर्तन लाता हूँ, उनको जल्दी से चलाता हूँ अगर वो जल्दी से चल न पाये

और मेरी आज्ञा का उलंघन किया तो हानि होने का डर है। इसको समझना सबके लिए बहुत जरूरी है। जो कुछ मैंने अभी बताया है इसकी कापियाँ बना कर सबके हाथ में देनी चाहिए, जिन्होंने दीक्षा लिया है उनको बार-बार ये पढ़ना चाहिये। उनके पास ये वाणी रहनी चाहिए। उनको अपनी जिम्मेदारी समझना चाहिए। कभी भूल कर भी आज्ञा का उलंघन नहीं होना चाहिये।

मैं जगत् की सच्ची गुरु हूँ। एक मेरे सिवाय कुछ भी नहीं है। जगत् में जिस जगह जहाँ पर जो भी सत्गुरु बैठे हैं वहाँ मैं बैठी हूँ, भूले हुए जीवों को बताने के लिये कि मेरे सिवाय कुछ भी नहीं है। जो है सो मैं हूँ। बहिरांग में मैं कोटि सूर्यों और चन्द्रमाँ को उदय करती हूँ। अंतरंग में मैं जीवों के हृदयों को प्रकाशित करती हूँ। खेल मेरा है। दोनों जगह मेरा काम है। जो मेरा बहिरांग कार्य है वो स्थूल कार्य है। अंतरंग में मेरा सूक्ष्म कार्य है। बहिरांग में जो कार्य है वो भी मैं हूँ। परन्तु स्थूल रूप से अंतरंग में जीवों में जो ज्ञान का प्रकाश उपजता है वो गुरु रूप से जीवों के हृदयों को मैं ही प्रकाशित करती हूँ। भूलो नहीं तुम कुछ नहीं हो, सबके अंदर मेरा खेल हो रहा है, भूल कर भी चक्कर में मत पड़ो। तुम कुछ करने कराने वाले नहीं हो। अपनापन हटाओ और मुझ एक में रहो। केवल मेरी गोद में विश्राम की जगह है। मुझमें रहना अमृत पीना है। बहिरंग में, झूठे अहम् में रहना विष पीना है। अहम् में जीना, अहम् में रहना गंदी नाली का कीचड़ पीना है और मुझ ईश्वर में रहना अमृत पीना है। ये

मनुष्य चोला अमृत पीने के लिये बनाया है। बदबूदार कीचड़ खाने के लिये नहीं बनाया है। जो मेरे इस दरबार में आकर विष पीता है मुझे छोड़ देता है, सत्य को छोड़ देता है और अहम् में रहता है, अहम् जीवन में रह कर, मुझसे अलग रह कर, मुझे भूले रहता है, अहम् में रह कर मुझ सत्य को भूला रहता है और वस्तुएँ जमा करने में लगा रहता है ज़खीरा करता है, उम्र भर चीजें इकट्ठी करता है, ज़खीरे करने में लगा रहता है, उसके अंदर से बदबू आती है। उसके अंदर मैल भरा हुआ है। वो कीचड़ खाता है। एक में, उस अनंत जीवन में रहना ही सच्चा जीवन है। वो मैं हूँ। एक मेरे सिवाय कुछ नहीं है, एक में रहना ही अमृत पीना है। एक में रहना अपने आप को गंवा देना है। एक में रहना सदा प्रकाश में रहना है। एक में रहना सदा ज्ञान में रहना है। एक में रहना सदा माँ की अनंत गोंद में रहना है। एक से अलग रहना झूठ में रहना है। यही समझने का है। सब एक में रहो। अपने को अलग नहीं समझना। जानते हो जो जख़ीरा कर रहे हैं वो क्या कर रहे हैं? जो जख़ीरा कर रहे हैं वो बहुत बड़े दायरे में रह कर भी छोटे से दायरे में रह रहे हैं। बड़े दायरे में रह कर मुझे कहता है, माँ को कहता है – मैं अलग हूँ। मैं छोटे दायरे में तुझसे अलग रहना चाहता हूँ। ये मेरे बाल-बच्चे हैं मैं इनके लिये जख़ीरा करना चाहता हूँ। मुझे माँ से कुछ लेना नहीं है। मुझे माँ से कोई मतलब नहीं है। तुम्हारे साथ मेरा कोई मतलब नहीं है। मुझ अनंत को छोड़ कर, मुझ दाता को छोड़ कर दात को अपना लेता है। नदी में जब पूर आता है तो किसान

लोग खेत में गड्ढा बना लेते हैं, गड्ढे में पानी जमा हो जाता है। नदी को छोड़ कर गड्ढे के पानी को अपना लेते हैं। कुछ समय बाद गड्ढे का पानी सड़ने लगता है, बदबू आती है, कीड़े-मकोड़े जमा होने लगते हैं, पानी काला पड़ जाता है। गड्ढे का जमा हुआ पानी काला होकर बदबू देने लगता है, भयानक बद्‌बू आती है, पानी सड़ जाता है कीचड़ बन जाता है, काला बद्‌बूदार कीचड़। उसके पास कोई नहीं जाता। ये है गड्ढे के पानी का जीवन। ये है गड्ढे का पानी। नदी का पानी रोज दिन-रात अपना गीत गाता प्रकाश में चलता जाता है। जिन्दगी का सुहाना राग, गीत गाना उसका काम है। दोनों में कितना फर्क है? एक जल नदी के रूप में जाकर सागर में मिल जाता है, दोनों एक हो जाते हैं। नदी और सागर का मिलन इतना आनंददायक है कि बता नहीं सकते।

गड्ढे का पानी बदबू देता है सड़ता रहता है। जो अपने बच्चों के लिये जख़ीरे कर रहा है वह छोटे दायरे में रहता है बदबूदार गड्ढे में रहता हुआ मर जाता है। उससे बदबू आती है, बदबू छोड़ता हुआ मर जाता है और उसकी वैसी ही गति होती है। जो अपने आप को नदी में छोड़ देता है, अलग नहीं होता वो सागर का आनंद पाता है। यही जीवन की सच्ची **Philosophy** है। जो मुझसे अलग अपने अहम् में रहता है वो बदबूदार गड्ढे के समान है। उसको न यहाँ कुछ मिलता है सिवाय गन्दगी के, मैले के, न आगे कुछ मिलता है, जो मुझ ईश्वरीय माँ में रहता है, साईं माँ में रहता है वो यहाँ भी जिन्दगी का सुरीला राग गाता है और आगे भी उसकी

बात बनी रहती है। मुझे आज यही समझाना है, उसके लिये ही यहाँ आई हूँ। जो कुछ मैंने बताया है उसको बार-बार पढ़ो, समझो और मनन कर अपना जीवन ठीक बिताओ, बदबूदार कीचड़ के गड्ढे मत बनो। अमृत की धारा बन कर अमृत सागर में, माँ में सदा के लिये मिल जाओ।

जै मैय्या

●●●

माँ-माँ-माँ

काली माँ को भजें निरन्तर।
काली माँ में ध्यान लगाएँ।।

जो काली माँ को भजता है वो माँ का हो जाता है। माँ के भजन से ही जीव की गति होती है। माँ का भजन किए बिना यह जीवन अकारथ जाता है। माँ का भजन ही जीव को पार करता है। माँ का भजन ही जीव को संकल्प-विकल्प दोनों से छुड़ा कर माँ की गोद में पहुँचाता है। माँ का भजन क्या है? इसको समझना है। माँ का भजन है अपने आपको शुद्ध मन से, पूरन मन से माँ के चरणों में चढ़ा देना। माँ की दया के बिना यह नहीं हो सकता, इसलिये सच्चे मन से माँ की कृपा की भीख माँगनी पड़ती है। माँ चाहें तो किसी को पार कर दें या किसी को जन्म-मरण के चक्कर में डाल दें। वहाँ **Rule Regulation** नहीं चलते। माँ के हुक्म में ही कोटि-ब्रह्माण्ड चल रहे हैं। माँ का हो जाने

में ही सुख है। माँ सर्व सुखों का भण्डार हैं। जो माँ का हो जाता है उसको इस जगत् में भी कोई कमी नहीं रहती और आगे भी नहीं रहती, माई आप मिल जाती हैं। माई का हो जाने में सारे बंधन, सारे क्लेश कट जाते हैं। माई का हो जाने से जीव निचले जीवन से उठ जाता है। **Lower Life** से उठ जाता है, **Life of Passion** से उठ जाता है। माई का हो जाने से माई पल-पल जीव की रक्षा करती हैं। माई का हो जाने में ही जीवन का सच्चा आनंद है। माई का हो जाना ही बच्चा बन जाना है। माई का हो जाने से जन्म-मरण का चक्कर नहीं रहता। माँ का हो जाने से जीव मुड़ कर गर्भ में नहीं आता है। माँ का हो जाने से जीव माँ की अनंत, पावन, पवित्र गोद में सदा के लिए समा जाता है। माँ ही सब कुछ हैं, माँ को जानना ही माँ का सच्चा भजन है। माँ को जानना ही सबसे बड़ा भजन है। माई ही सब कुछ हैं, उसको जानना ही सबसे बड़ा ज्ञान है। माई-माई कहते तो सब हैं लेकिन पहचानता कोई नहीं है। पहचानता वो ही है जिस पर उनकी दया होती है। माई आप पहचान करवाती हैं, अपना-आप जनवाती हैं, अपनी समझ देती हैं, तब जीव को कुछ जान पड़ता है। माई की दया क्या है? माई की करुणा क्या है? माई का आनंद क्या है? माई को जानने के लिए माई का बच्चा बनना पड़ता है। माई का बच्चा बने बिना जीव का उद्धार नहीं हो सकता। माई चाहती हैं सब मेरे बच्चे बनें किन्तु बनते नहीं हैं। बड़ा बनना चाहते हैं, जख़ीरा करना चाहते हैं। दूसरों से बड़ा बनने में खुशी होती

है। बच्चा बनने में माई मिलती हैं। बड़ा बनने में नहीं। माई को जानना है, माई को पाना है तो, सबकी धूल बनो, मिट्टी में मिल जाओ, जमीन से लग जाओ, माई सब कुछ दे देगी। माई की पावन गोद में आकर क्या नहीं मिलता है? सब कुछ मिल जाता है कुछ भी पाना बाकी नहीं रह जाता है। माई की गोद ही हमारा **source** है, जहाँ से हम युग-युग पहले अलग हुए और जन्म-मरण की भट्टी में जल रहे हैं, माई की गोद से अलग होकर। माई की गोद फिर से पाना है, माई की दया लेकर, माई की कृपा लेकर, माई का आसरा लेकर, माई का बच्चा बन कर। माई का बच्चा बन कर जगत् में रहना है, माई का होकर जीवन व्यतीत करना है। माई-माई मेरी माई सब कहते हैं, मुझको अपना बनाता कौन है? जो बनाता है वो मेरा हो जाता है, मैं उसकी हो जाती हूँ। मुझमें और उसमें कुछ भेद नहीं रहता है। मुझे जानना है तो समझो – मैं सबकी माँ हूँ, कोटि-ब्रह्मण्डों की माँ हूँ। मुझसे ही कोटि -ब्रह्मण्ड उपजते हैं। मैं ही सबकी पालना कर रही हूँ। अंत में वो मुझमें ही समा जाते हैं। मैं ही सबकी रक्षक और भक्षक हूँ। जब जीव सच्चे मन से मेरी शरण में आ जाता है तो मैं उसकी हो जाती हूँ। जब वो मेरा रास्ता छोड़कर माया के रास्ते जाता है तो वो दुःख उठाता है, क्लेश उठाता है, मार खाते जाता है परन्तु उसे समझ नहीं आती। समझ तब आती है जब मेरी दया होती है। जब मेरी दया होती है तो तब वो सीधे रास्ते पर आ जाता है। मैं कौन हूँ? कैसी हूँ? क्या हूँ? वो ये जाने या ना जाने परन्तु दिल से मेरा हो जाये। जो सच्चे

मन से मेरा हो जाता है मैं उसकी हो जाती हूँ। ये मेरा निश्चित ज्ञान है। मुझको पाने के बाद उसको और कुछ पाना बाकी नहीं रह जाता है। जो इसको जान लेता है, अपने जीवन में अनुभव कर लेता है, मैं उसको सब कुछ दे देती हूँ, क्योंकि वो मेरा अपना है, पराया नहीं है, पराया तो कोई नहीं है सब मेरे अपने हैं, पर क्या करूँ सुनते नहीं, अपनापन उठाते हैं तो पराये हो जाते हैं। वो समझते नहीं हैं गलत रास्ते पर चलते हैं। वो मेरे हैं, मेरे बच्चे हैं। पर क्या करूँ जब सुनते नहीं तो मजबूर हो जाती हूँ। मजबूर होकर मुझे उनको जन्म-मरण के चक्कर में डालना पड़ता है। मैं ही सब कुछ हूँ, जब जीव यह जान लेता है, तब चक्कर खत्म हो जाता है। चक्कर में तभी तक आता है जब जीव को ये समझ नहीं आती मैं कौन हूँ। मुझे जान लिया तो सब कुछ जान लिया। मुझे पहचान लिया तो सब कुछ पहचान लिया और कुछ जानना बाकी नहीं रहा। मुझे जानना है तो पहले अपने अंदर देखो, मैं ही रग-रग में समाई हुई हूँ। तुम्हारे मन को, तुम्हारी बुद्धि को, तुम्हारे हर अंग को मैं ही चला रही हूँ। मेरे बिना कुछ भी तो नहीं है। ये ही निश्चित ज्ञान है।

मैय्या अनूपे साईं स्वरूपे,
प्रिये तेरी करनी प्रिये तेरो नाम।
तू कल्याण करती सर्व पाप हरता,
तुझे तेरे बच्चों का कोटि प्रणाम।।

माँ ... माँ ... माँ ... माँ

माँ! माँ! माँ! शब्द में कितना रस है, यह एक बच्चा ही जान सकता है, बड़े इसका महत्त्व नहीं समझ सकते। जब एक नन्हा बच्चा अपनी माँ के लिये तड़फता है तो माँ उसके बिना कहाँ रह सकती है। माँ दौड़ी चली आती है, जहाँ भी हो, कहीं भी हो, दौड़ी चली आती है अपने बच्चे को मिलने को, अपने बच्चे को अपनी गोद में लेने के लिये, अपना लेने के लिये, अपने बच्चे को फिर से वापिस अपनी गोद में लेने के लिये। माँ! माँ! माँ! जादू भरा है इस शब्द के अंदर। माँ की करुणा ही इस जगत् को चला रही है। माँ की करुणा के बिना जीव की गति कैसे हो सकती है। जब जीव भर्राई हुई आवाज़ से माँ को पुकारता है, तो माँ से सहन नहीं होता उनके मन में भी तरंगें उठना शुरु हो जाती हैं, उनसे भी सहन नहीं होता। माँ! माँ! माँ! बच्चा और माँ एक हो जाते हैं। बच्चा और माँ दो नहीं रहते। बच्चा माँ की गोद में मिल जाता है। माँ की गोद में मिल कर एक हो जाता है। माँ और बच्चे का यह मिलन इतना जबरदस्त आनंददायक है कि शब्दों का विषय नहीं है। माँ बच्चे को हाथ देकर जगत् में रखती हैं। माँ अपने हाथ से बच्चे को खिलाती हैं, अपने हाथ से पिलाती हैं, अपने हाथ से पहनाती हैं। जहाँ भी लेकर जाना हो वो खुद लेकर जाती है, खुद साथ जाती हैं। मेरे बच्चे पर कोई अड़चन न आ जाये। बच्चे से कोई भी भूल हो जाये तो उसे बुरा नहीं लगता – मेरा बच्चा है। बड़ा है तो बुरा लगेगा। बच्चे की भूल माँ को प्यारी लगती है। माँ को आनंद देती है। माँ मैं भूला हूँ क्या करूँ? जब मेरे बच्चे भूल करते हैं

तो मुझे बुरा नहीं लगता। बड़े भूल करते हैं तो उनको कर्म का भोग भोगना ही पड़ता है। बच्चे तो बच्चे हैं। माँ की गोद में हैं। बच्चा माँ की गोद में खेल रहा है उसकी भूल कैसी? माँ की गोद में कभी भूल होती है। भूल तो बाहरी जगत् में होती है। माँ की गोद में भूल कैसी। माँ की गोद में आनंद ही आनंद है, सुख ही सुख है, परम आनंद है।

माँ के प्यार में सब कुछ खो दो, माँ के प्यार में अपने आपको गँवा दो। माँ का प्यार ही सच्चा प्यार है जो जन्म-जन्मांतर हमारा साथ देता है। माँ के प्यार में सब कुछ मिलता है, माँ का प्यार तरन-तारन देता है। माँ का प्यार उसी पल मिठास देता है। माँ का प्यार उसी पल अमृत पिलाता है। माँ के प्यार में क्या नहीं है। माँ के प्यार से ही जीव की बात बनती है। माँ के प्यार से ही जीव सुखी होता है। माँ का प्यार ही जीव के जीवन को उठा लेता है। माँ का प्यार उसके जन्म-जन्मांतर के पापों को धो देता है। माँ का प्यार मन की एक नहीं चलने देता। माँ का प्यार मन को काबू कर लेता है। माँ के प्यार में मन का बस नहीं चलता। माँ के प्यार में मन बेबस हो जाता है। माँ के प्यार से ही चित्त-शुद्धि होती है। माँ के प्यार से जीव अमृत पीता है। माँ के प्यार में खोकर जीव अमृत जीवन को पाता है। माँ का प्यार अपने आप को गँवा देता है। माँ के प्यार में सामर्थ्य होता है। सामर्थ्य का मतलब यह नहीं कि उसको अलग कुछ शक्ति मिलती है, शक्ति माँ में मिल कर वो एक हो जाता है। माँ का प्यार क्या नहीं देता है। ज़ीव को नर से नारायण बना देता है। माँ का

प्यार समझने की जरूरत है, माँ के प्यार से सब कुछ समझ आने लगता है। माँ के प्यार से, जो नहीं दिखता वो भी दिखने लगता है। माँ के प्यार से जीव समझ जाता है कि मैं कुछ नहीं हूँ, सब कुछ माँ है। माँ के प्यार में जीव अपने आप को भी भूल जाता है। सर्व सामर्थ्य माँ में मिल कर एक हो जाता है। माँ का प्यार पाया कैसे जाए? माँ की दया से, अपनी किसी करनी से नहीं। अपनी किसी करनी से कोई भी मेरा प्यार नहीं पा सकता है। ये मेरा खेल है। जिस पर मैं दयाल होती हूँ, जिस पर मुझे दया करनी होती है मैं उसे अपना सच्चा प्यार देती हूँ। सच्चे प्यार में वो निहाल हो जाता है। वो गद्-गद् हो जाता है, हर समय उसकी आनंद की स्थिति बनती है। वो मिट्टी के चोले में रह कर भी पल-पल अमृत पीता है। मुझे पाने के लिये क्या करना है? मेरे साथ सच्चा प्यार करना है। बच्चा बन कर, बड़ा बन कर नहीं। मेरा प्यार सब कुछ सिखा देता है। मेरे प्यार से जीव की बिगड़ी हुई बात बन जाती है। मेरे प्यार से जीवन का सफर आसानी से तय हो जाता है। मैं साथ खड़ी होकर जीवन का सारा सफर बहुत आसानी से तय करा देती हूँ, कोई अड़चन नहीं आने देती। मेरा काम है बच्चे की रक्षा करना। जो मेरे हो जाते हैं, उनकी रक्षा होती ही है। जो माया के होते हैं, जो संसार के होते हैं वो महामूर्ख, पाखण्डी अपने कर्मों का फल भोगते हुए संसार से रोते हुए चले जाते हैं। मेरे को उन पर दया नहीं आती क्योंकि वो मेरा हाथ छुड़ा कर भागते हैं। क्या करूँ मेरे को दया नहीं आती मैं कहती हूँ भोगो अपने भोग। जब

तुम्हें मेरी दया नहीं होना तो जाओ भोगो। यदि उनको मेरी जरूरत नहीं तो मुझे भी नहीं। मैंने चाहा था तुम्हें जन्म-मरण से आज़ाद करना, परन्तु तुम मेरी ओर देखते भी नहीं, मेरी वाणी को सुनते भी नहीं, मेरी वाणी को ध्यान भी नहीं देते, मेरी वाणी को जीवन में भी नहीं लाते। मेरी वाणी को एक कान से सुनते हैं दूसरे कान से निकाल देते हैं। मेरे लिये कोई भी रास्ता नहीं छोड़ते, मेरे लिये एक ही रास्ता है, तुम्हें तुम्हारे कर्म भुगतवाना। तब तुम्हें याद आयेगा हमारी भी माँ थी। हमारा हाथ पकड़ा था। बार-बार हम छुड़ा कर भागे। अन्त में ख्वार होओगे, कोई सुनेगा नहीं, रोते इस जगत् से जाना पड़ेगा। माँ-माँ कहते हैं। मुँह से कहने से क्या होता है? मुँह से कहने से बात नहीं बनती। जो सच्चे हृदय से बोलता है उसकी बात बनती है। जो हृदय से बोलता है वो मेरा हो जाता है। माया के पीछे नहीं जाता। माया को छोड़ देता है। माया में रह कर भी माया से अलग रहता है। माया मेरी है परन्तु मैंने उसको जगत् में जीवों के Test करने के लिये रखा हुआ है। जो मेरे से सच्चा प्यार करते हैं वो माया की ओर देखते ही नहीं हैं। जो मायावी होते हैं उनसे मेरा हाथ छुट जाता है। मूर्ख और पाखण्डी लोग मुझको समझते नहीं हैं, इसीलिए माया बटोरते हैं। माया बटोरने में ही सारा समय बर्बाद कर देते हैं। जब काल आ जाता है तब आँख खुलती है – "अब क्या होता है जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत।" माँ-माँ कहना है तो माँ के बनो, सच्चे मन से। शुद्ध हृदय से बन कर देखो तो सही। देखो क्या होता है। देखो मैं क्या खेल करती हूँ

कैसा आनंद देती हूँ। कैसा परम आनंद मिलता है। ये ही तो जानना है। जिसने जान लिया वो फिर भटका नहीं, जो भटका उसने जाना नहीं। माँ का खेल हो रहा है जिसमें मनुष्य की कहीं भी जगह नहीं रहती है। माँ के खेल में मनुष्य की जगह नहीं होती। माँ अपना खेल आप करती है। उसको किसी की मदद की जरूरत नहीं है। माँ का हो जाना ही जीवन की सबसे बड़ी **glory** है।

●●●

एक हरि आधार

पांचों पाण्डव हरि को भजते हरि को एक आधारा।
जै जै जै श्री कृष्ण नारायण अर्जुन नर अवतारा।।

समझने की बात है "हरि को एक आधारा" जिसने एक मेरा आधार लिया उसके कर्म चाहे कितने भी भयानक हों हर कदम पर उसकी रक्षा होगी ही। पांचों पाण्डव ने एक मेरा आधार लिया हुआ था। महाभारत का इतिहास क्या बताता है, हर कदम पर उनकी रक्षा हुई। जो एक मेरे आसरे रहता है उसको मैं छोड़ भी कैसे सकता हूँ। मैं ही कृष्ण कन्हाई हूँ। मैं ही बाबा साईंनाथ हूँ। हम दोनों में भेद नहीं है। जो मुझको छोड़ कर संसार के आसरे रहता है, संसार की चीज़ों के आसरे रखता है, धन-दौलत का आसरा रखता है, अपने मित्रों का आसरा रखता है, उसको दुःख पर दुःख आते हैं। जो एक मेरे आसरे रहता है, मैं सदा उसका सहाई होकर रहता

हूँ। मैंने आज तक अपने किसी भी भक्त को आपतकाल के समय उसका हाथ नहीं छोड़ा है, सदा उसकी रक्षा किया है। मेरा काम है जीवों की रक्षा करना। जो सच्चे मन से मेरे अर्पित हो जाते हैं उनकी रक्षा जरूर होती है। यही कुछ समझने का है। जगत् में सुखी रहना है तो एक मेरा आधार लो अपने साईं का, बाकी सब आधार, सब चप्पू उठा कर फेंक दो। अपने साईं के आसरे जो रहता है वो यहाँ भी सुखी रहता है, अंत में मैं उसको इस जन्म-मरण के चक्कर से भी छुड़ा देता हूँ। मेरा नाम है 'साईंनाथ'। 'साईं' का अर्थ होता है 'मालिक' 'नाथ' का भी यही अर्थ है। साईंनाथ का अर्थ है जिसके हाथ में सब कुछ हैं, सब रचना मेरे हाथ में है। सच्चा जीवन ही वो है जो मेरे अर्पित होकर बिताया जाये, जो मेरे हुक्म में बिताया जाये। जो मेरी हुक्म अदूली करता है उसके हाथ कुछ नहीं आता है, मूर्ख जीव समझता नहीं है। जिसके पास जो कुछ है वो मेरा दिया हुआ है। मेरा दिया हुआ खाता है, मेरा दिया हुआ भोगता है, मेरी देन में उसको संसार के सब सुख मिलते हैं और फिर जब मैं अनेक रूपों से दिन में कितनी बार उसके सामने आता हूँ तो मुझे फटकारता है, गाली देता है, क्या-क्या नहीं करता। मैं उसके साथ क्या सलूक करता हूँ, वो वापसी में मेरे साथ क्या सलूक करता है। कितनी अजीब स्थिति है परन्तु मैं मनुष्य नहीं हूँ ईश्वर हूँ, नर नहीं हूँ नारायण हूँ। वो मेरे को डाँटता-फटकारता है, बुरा भला भी कहता है, गाली भी देता है, मैंने सब कुछ उसे दे रखा है, उससे छीन नहीं लेता दिये रखता हूँ, जब तक

कि वो दया की रस्सी काट नहीं देता, अंत में अपने को खो देता है। आखिर में सब कुछ खो देता है, सब कुछ चले जाता है और अपने खोटे कर्म भोगने के लिये आगे चले जाता है। मैंने ये रचना अपने खेल के लिये बनाई है इसमें दूसरों की मर्जी और इच्छा नहीं चल सकती। सचमुच दूसरा कोई है ही नहीं। जब लोग अपने आपको कुछ बना लेते हैं तो धोखा खाते हैं, अंत में तकलीफ उठाते हैं।

दुर्योधन ने भरी सभा में शक्ति को ललकारा।
सब कौरवों को शक्ति ने इस जग से दियो उखाड़ा।।

सकल स्त्री जाति शक्ति माँ का स्वरूप है। दुर्योधन ने समझा मैंने द्रौपदी के पतियों को बेकार कर दिया अब मैं इसके ऊपर कोई भी अत्याचार कर सकता हूँ। स्त्री शक्ति का रूप है। वो उसकी इज्जत नहीं उतार रहा था वो माँ को ललकार रहा था। उस मूर्ख के सिर के ऊपर उसका काल मंडरा रहा था। वो शक्ति माँ को ललकार रहा था, फिर हुआ क्या वो अगली लाईन में बताते हैं – सब कौरवों को शक्ति ने ... अब शक्ति का, माँ का अताप आया एक सौ एक भाई थे कौरव उसमें से एक भी नहीं बचा। अपने माता-पिता को पानी देने के लिये एक भी नहीं बचा। न वो बचे न उनका कोई बाल-बच्चा बचा, न खानदान के नाम के लिए कोई बचा। शक्ति ने सबको खत्म कर दिया। जो महामूर्ख पाखण्डी माँ का अनादर करते हैं उनकी यह हालत होती है। आज इस समय भी क्या हालत हो रही है? कितने ऐसे दुर्योधन बने बैठे हैं जिनको माँ का डर और खौफ़ नहीं रहा है। एक

दिन उन सबकी भी वो ही हालत होने वाली है जो कौरवों की हुई उनका नाम निशान शक्ति मिटा देगी। माँ की जब नाराज़गी आती है तो माँ खून से होली खेलती है। सदा माँ से डर कर रहना चाहिए। आज जगत्‌ में जो अत्याचार हो रहे हैं, माँ सब देख रही है, इसीलिए बताते हैं आने वाला समय बहुत भयानक है, न जाने कब क्या हो जाये। लोगों का आचार उठ चुका है। यही समझने का है।

बस अंत में एक बात ही आप सबको समझानी है – अपनापन निकाल दो, एक मेरे आसरे अपना जीवन व्यतीत करो, अपना सर्वस्व मुझे जानो, अपने मन की संपूर्ण वृत्तियाँ मेरे चरणों में लगा दो, केवल मुझे ही पाने का जतन करो, मेरा ही भजन करो, हर कर्म मेरे ही पाने के लिए हो, मुझसे सच्चा प्यार करो, मैं और माँ दो नहीं हैं, एक हैं, द्वैत का भाव निकाल दो। खाली हम दोनों में से ही नहीं और भी भगवान के जितने भी रूप, अवतार, वली-औलिया हुए हैं, सबमें हम ही हैं, सबके अंदर हमें ही देखो। भेद की दीवारें तोड़ डालो, भेद-भाव खत्म कर दो। सब जीवों में हमें ही देखो, तुम सबका उद्धार हो जायेगा।

●●●

मैय्या तुम्हें पुकारे ...

ॐ माई आतम् ब्रह्म। ॐ साई आतम् ब्रह्म।।

ये ही हमारा अपना घर है। घर से बेघर होकर हम जन्म-मरण की भट्टी में जल रहे हैं। जब तक हम फिर वापस अपने घर में नहीं पहुँचते, तब तक जन्म-मरण का चक्कर चलता ही रहेगा। 'मैय्या तुम्हें पुकारे बच्चों आ जाओ' माँ अंदर से पुकार रही है। 'मैय्या तुम्हें पुकारे बच्चों आ जाओ।'

खेलन में है युग-युग बीते,
बाहर भटक-भटक विष पीते,
अब तो घर में आ जाओ।
आओ बच्चों आ जाओ,
मैय्या तुम्हें पुकारे बच्चों आ जाओ।।

युग-युग से माँ की गोद से अलग होकर खिलौनों के साथ खेलने में लगे हुए हो। ये खेल कितना महँगा और भयानक पड़ा, आप लोग इसको समझ नहीं रहे हो। ये खिलौने अंदर माँ की गोद में आने नहीं देते, बाहर ही भटकाते रहते हैं, माया की विष पिलाते हैं। 'खेलन में हैं युग-युग बीते।' कितने युग बीत गये माँ की गोद से अलग हुए और जन्म-मरण के इस भयानक चक्कर में पड़े हुए।

'खेलन में हैं युग-युग बीते, बाहर भटक-भटक विष

पीते।' जब तक हम माँ की अमृतमय गोद में अंतरंग में नहीं जाते तब तक हम बाहर में खिलौनों के साथ खेलते हुए जहर पी रहे हैं, विष पी रहे हैं। युग-युग बीत गये इन खिलौनों से खेलते हुए, माँ को भूले हुए। कितनी देर भूले रहोगे बच्चों इन खिलौनों के साथ, कब तक माँ को भूले रहोगे, 'मैय्या तुम्हे पुकारे बच्चों आ जाओ' आओ प्यारे बच्चों फिर से आ जाओ। जहाँ से अलग हुये, फिर से वहाँ आ जाओ। अपनी माँ की गोद से अलग हुए, फिर से वहाँ आ जाओ। माँ की गोद से अलग होकर आज तक किसी ने सुख पाया है? घर से बेघर होकर किसको शांति मिली है? सच्चा विश्राम अपने घर में ही मिलता है। बाहर तो भटकना ही भटकना होता है। कब तक ऐसे बाहर भटकते रहोगे भाई? ये दरबार माँ की अमृतमय गोद है। माँ अपनी अपार दया से आप सबको अपनी इस अमृतमय गोद में लायी है। यहाँ आकर भी भटक जाओगे तो फिर आप जैसा दुर्भागा कौन है? अभागा कौन है? अपने आपको भूल रहे हो बच्चों। आप सब अमृत माँ के अमृत बच्चे हो। अभी अपने आप को पहचान लो, अभी असलियत को जान लो तो काल तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। माँ के द्वार तक पहुँचना ही मुश्किल है। पहुँच गये तो माँ उद्धार करती ही है। इसीलिये माँ आप सब पर इतनी मेहनत कर रही हैं। ठीक बताओ, पहले भी कभी ऐसे देखा है किसी माँ को अपने बच्चों पर इतनी मेहनत करते हुए। अपने हृदय में अच्छी तरह टटोल कर देखो पहले भी कभी देखा है किसी माँ को अपने बच्चों पर इतनी मेहनत करते

हुये। ये क्यों ऐसे है? जानते हो? माँ जिसको अपने द्वार पर लाती है, उसको पार लगा कर ही छोड़ती है। वो सीधी तरह नहीं चलता तो दूसरी तरह से चलाती है। लेकिन पार जरूर लगाती है। गंगा के किनारे पर पहुँच कर भी कोई प्यासा रहता है रे? अपने आपको शुद्ध मन से मेरे हवाले कर दो, दूसरा कोई रास्ता नहीं है पार होने का। जो बीती सो बीती। अब सच्चे मन से अर्पित हो जाओ। समय थोड़ा है काम ज्यादा है और इन्तजारी नहीं की जा सकती। समझने की बात है। बाहर की विष क्यों पीते हो? आतम्-अमृत क्यों नहीं पीते? अंतरात्मा का सुख क्यों नहीं लेते? अंतरात्मा का सुख लेने के लिये जब तक आप लोग सच्चे मन से मेरे अर्पित नहीं होंगे, तब तक आपकी बात बनेगी नहीं। जीवन यूँ ही बेकार चले जायेगा। बार-बार आप लोगों को एक बात ही समझाने के लिये मैं हर रोज यहाँ आ रही हूँ। सच्चे मन से मेरे अर्पित हो जाओ। इसी में आप सबका कल्याण है। नहीं तो जन्म-मरण की बाजी हर जायेगी। सबको अच्छी तरह से इस बात को अपने मन में दृढ़ करना चाहिए। मैं ही सब कुछ हूँ मेरे बिना कुछ भी नहीं है यदि ये सच है और सच तो है तो फिर आपको अर्पित हुए बिना क्या मिलेगा? मेरे बिना आप जो कुछ भी चाहते हो, जिस किसी चीज़ की वासना या ख़्वाहिश करते हो वो सब आपको फंसाने वाली है। आपके गले में फांसी डालने वाली है, आपको माया के बंधन में डालने वाली है, आपको मोह के चक्कर में डालने वाली है। छुड़ाने वाली केवल एक मैं हूँ। मेरी शरण में नहीं आओगे तो यहाँ भी

रोना है आगे भी रोना है। यहाँ भी रक्षा नहीं होएगी आगे भी सब बात बिगड़ जायेगी। मैंने आप सबको बहुत दृढ़ कराने की कोशिश किया है। कईयों को दृढ़ कराने की कोशिश किया है, कईयों को दृढ़ हो गया है, कई अभी भी अपनी उल्टी चाल पे चलते जा रहे हैं। मैं नहीं चाहती मेरे इस दरबार का कोई भी लड़का-लड़की चौरासी में फंसे। मैं नहीं चाहती की मेरे इस दरबार का एक भी लड़का-लड़की ऐसा हो जिसका उद्धार न हो। मैं नहीं चाहती कि मेरे इस दरबार का एक भी बच्च्या न हो जो मेरे साथ सच्चा प्रेम और प्यार न करता हो। इसीलिए तो मुझे बार-बार यहाँ आना पड़ता है कि कोई एक लड़का-लड़की भी इस दरबार का पीछे न रह जाये सब निकल जायें, सबका उद्धार हो जाये। यही कुछ आपको बार-बार मैं समझाने चली आ रही हूँ। सबका जीवन मेरे हाथ में है। जो सच्चे मन से मेरे अर्पित हो जायेगा उसका उद्धार होने ही वाला है। हर एक की तस्वीर हर समय मेरे सामने रहती है। वो क्या कर रहा है, उसके मन में क्या चल रहा है, उसके भाव कैसे हैं, उसके अंदर क्या उठ रहा है – हर चीज़ मेरे सामने रहती है। मैं किसी एक को भी छोड़ना नहीं चाहती इसीलिए मुझे बार-बार यहाँ पर आकर बताना पड़ रहा है। पकड़ा है तो पार लगाना ही चाहती हूँ। हाथ में लिया है तो पार करने की जबरदस्त इच्छा होती है परन्तु क्या करूँ आप लोगों में से कई ऐसे हैं जो बार-बार हाथ छुड़ा कर भागते हैं, माया में जाते हैं, वासनाओं के पीछे जाते हैं माँ को छोड़ देते हैं और धन-दौलत, संसार को

अपनाने की ओर जाते हैं उनके लिये मुझे बार-बार बोलना पड़ता है कि किसी तरीके से सीधे रास्ते आ जायें, उनका उद्धार हो जाये। यही समझना है। माँ के द्वार पर आकर फिर कोई चौरासी में रह गया तो कितने दुर्भाग्य की बात है।

आनंद दायक आनंद दाता प्रिया जी को नाम है।
राधे राधे बोलना यही हमारो काम है।।

जानते हो मैं जगत् में क्यों आती हूँ? जगत् में आने का मेरा एक ही उद्देश्य होता है – जग को आनंद देना। दुःखी जीवों को दुःख से निकालना। जब जीव गलत रास्ते पर चल पड़ते हैं, माया में फंस जाते हैं, मोह की पट्टी उनकी आँखों पर बंध जाती है तो वो सच्चाई को नहीं देख पाते। दिन-रात असत्य में विचरते हैं, धन-दौलत जमा करने के लिए जायज़ नाजायज़ सब तरीके लगाते हैं, धर्म-अधर्म का ख्याल नहीं रहता है। उस समय मैं आदि अनादि शक्ति माँ का रूप लेकर जगत् में प्रगट होती हूँ और दुष्टों का संहार करती हूँ। जो अपने प्रिय बच्चे हैं भक्त हैं, संत हैं, जिनको सच्ची लगन है जिज्ञासा है उनके लिये मैं आनंदमयी लीला करती हूँ, आनंदमय व्यवहार करती हूँ। मेरी लीला को देख कर और सुन-सुन कर मेरे भक्त सदा आनंदित रहते हैं। उनके पाप धुलते जाते हैं, उनकी चित्त शुद्धि होती है। मेरे गुणवाद गाना क्या मामूली बात है। जगत् उसकी महिमा को समझता नहीं है। जब मैं ही बाबा साईं नाथ के चोले में थी तो सारी-सारी रात कीर्तन करने वाले लोग, कव्वाली करने वाले लोग मेरे ही सामने मेरा ही गुणवाद गाया करते थे। देखने को बाबा

का रूप मस्ती में झूमता था बहुत सारे बाबा के दरबारी और साथी दो-तीन-चार बजे तक बैठते थे फिर बाबा की माया उन पर पड़ती थी, नींद आती थी और वे अपने घरों में चले जाते थे। सुबह -सवेरे बाबा उनसे मज़ाक किया करते थे। अरे बुद्धू लोगों! तुमको पता नहीं, तुमने कितना बड़ा आनंद miss किया, कितने बड़े आनंद से वंचित हो गये। इतना बड़ा आनंद छोड़ कर तुमको घर का ख्याल आया। बाबा के रूप में तो सोयम् मैं थी परन्तु वो जगत् के लोगों के लिये मिसाल बना रहे थे, आदर्श बना रहे थे, जगत् को एक आदर्श सिखा रहे थे कि देखो मेरे भजन में विलीन होकर तुम सोना तक भूल जाओ। कितना परम आनंद है? यही समझने की बात है। मेरी कथा और गुणवाद जीवों को पार करने वाले हैं। पहले भी एक बार बताया था कि गुरु नानक देव जी ने क्या प्रार्थना अकाल पुरुष के सामने रखी – गुण गांवां दिन रैन नानक चाहो एह। हे अकाल पुरुष! नानक एक ही भीख माँगता है कि दिन -रात आपके गुण गाता रहूँ, "गुण गांवां दिन रैन नानक चाहो एह" दिन को भी रात को भी "गुण गांवां दिन रैन नानक चाहों एह और कुछ नहीं माँगा बस यही माँगा। कितना आनंद, कितना रस उनको मिलता होगा कि उसके सिवाय उन्होंने कुछ नहीं मांगा होगा। दिन-रात उनके साथ -साथ बाला मर्दाना रहते थे गुणवाद गाने में उनकी मदद करने के लिये, उनका साथ देने के लिए चौबीसों घंटे उनके साथ रहते थे। जहाँ नानक मस्ती में आ गये वहीं उनका साज़ बजाना शुरु हो जाता। उनका काम

ही था वो (नानक जी) गुण गाते थे और वो साज़ बजाते थे। यही समझने का है। मेरे गुणवाद में जो रस है, जो आनंद है, जो मधुरता है वो मेरे प्यारे बच्चे ही जानते हैं। ध्यान अपनी जगह है, कीर्तन अपनी जगह है, भूल कर भी दोनों का मुकाबला, दोनों का **comparision** नहीं करना चाहिए। दोनों का अपना आनंद है, दोनों अपनी-अपनी जगह हैं। यही 'बाबा साईं नाथ' ने जगत् को सिखाया है। जानते हो वे सोयम् अपनी जेब से पैसे निकाल कर भजन-मंडली और कव्वालों को बुलाया करते थे। उनको इसी में आनंद मिलता था। सारी-सारी रात बैठ कर सुना करते थे। अरे बुद्धु लोगों अभी भी तो मैं तुम्हारे साथ बैठा हूँ, वहाँ सुनता था, यहाँ भी सुनता हूँ वहाँ भी बैठता था यहाँ भी तो तुम्हारे साथ बैठता हूँ। मेरे सिवा है ही क्या? यहाँ नहीं बैठता तो उस कमरे में बैठता हूँ। जानते हो तुम सबके आने से पहले मैं वहाँ आ जाता हूँ। वहाँ सुनता हूँ। जब तुम में से एक भी नहीं आया होता मैं पहले ही बैठता हूँ सुबह भी, शाम को भी। खाली तुम्हारे भजन संकीर्तन सुनने के लिये। अदृश्य रूप से तो मैं बैठता ही हूँ, प्रगट रूप से भी मैं सदा तुम्हारे साथ रहता हूँ। इसको समझो, समझने की बात है।

ध्यान से सुनो जो कुछ मैं बताना चाहता हूँ। मैं जगत् में आया था भेद-भाव की दीवारें दूर करने के लिये। अभी तक लोग इसको समझ ही नहीं पाये हैं। अब फिर मैंने ये सारा खेल यहाँ से रचा है। वो ही भेद-भाव की दीवारें दूर करने के लिये। यहाँ पर तुम सबके लिये मैंने हर रूप की स्तुति

लिखाई है। राम रूप की स्तुति लिखाई, शिव रूप की स्तुति लिखाई, साईं रूप की स्तुति लिखाई, माँ के पावन रूप की स्तुति लिखाई, दातात्रे रूप की स्तुति लिखाई, भगवती के अलग-अलग रूपों की स्तुति लिखाई, अब नरसिंह देव जी की स्तुति लिखाई है, अब आखिर में अपने बहुत ही प्यारे रूप कृष्ण जी की स्तुति लिखाई है, ये सब सामग्री आप को दी है एक मतलब से कि सभी रूप मेरे हैं सबमें मैं हूँ। भेद-भाव की दीवारें मिटा दो। इनमें से किसी भी रूप का कीर्तन करो। अभी मेरी इच्छा से जितनी भी स्तुति इकट्ठी की गई है, उनका एक ग्रंथ बना दिया जायेगा, आप लोगों के लिये फिर बाद में जगत् के लिये इसमें खाली स्तुति ही नहीं इसमें मेरा पूरा रास्ता आ गया है। अब जीव एक ही ग्रंथ के अंदर सब रूपों की स्तुति कर सकता है और मेरा रास्ता भी जान सकता है और सबसे बड़े मतलब के लिए मैंने ये स्तुति लिखवाई है कि लोग भेद-भाव को दिलों से मिटा दें। एक रूप की उपासना करते हैं तो दूसरे रूप की ओर देखते नहीं। जहाँ देखो भेद-भाव है। इस भेद-भाव को मिटाना है। मैं एक हूँ, मुझमें और माई में भेद नहीं है। शिव-शक्ति एक हैं। मैंने इस ग्रंथ, श्री साईं गीता के द्वारा जगत् को सिखाना है कि सभी रूपों में एकता है। मैंने ये शरीर छोड़ने से पहले आप सब बच्चों को आदेश देना है कि ये मिट्टी जा रही है मैं तो इस ग्रंथ में हूँ। कोई भूल मत करे जो कुछ मैंने जगत् को सिखाना था समझाना था सब मैंने इस ग्रंथ में दे दिया है। सबको इस ग्रंथ का सिमरन करना चाहिए, इस ग्रंथ में ही

अपने बाबा को देखना चाहिए और उसका पारायण करते-करते भेद भाव की दीवारें अंदर से निकाल देनी चाहिये। मेरा खेल न्यारा होता है एक ही ग्रंथ में मेरा पूरा रास्ता आ गया है अब उसको समझने की जरूरत है। मेरी दया से जहाँ-जहाँ ये ग्रंथ जायेगा वहाँ-वहाँ से अज्ञान और अंधेरे का नाश होगा, भक्ति भाव बढ़ेगा तथा ज्ञान का अनुभव होगा। मेरे चरणों में और मेरे अनेक रूपों के प्रति सब के दिल में सच्चा प्रेम जागृत होगा यही इस पावन ग्रंथ को मेरा आशिर्वाद है। ये सोयम् मेरा – बाबा साईं नाथ का लिखवाया हुआ है। एक-एक शब्द मेरा अपना है, पूरा रास्ता मेरा अपना है। इस ग्रंथ को जो मेरा प्रगट रूप करके जानेगा वो मेरी दया से सब कुछ पा लेगा। सभी भ्रम, वहम् और अज्ञान इस ग्रंथ को पढ़ने से दूर होंगे। जगत् में प्रकाश और उजाला होएगा। भूले हुए लोगों के लिए, सतूमार्ग से भटक गये लोगों के लिए ये ग्रंथ मेरी देन है। जो भी अपने जीवन को इस ग्रंथ की वाणी में ढालेगा उसका उद्धार होगा ही, यही समझने का है।

●●●

गुरुवाणी का महत्त्व

हर पल गुरु का जन्म दिन है। जिस पल तुम गुरु की वाणी सुनते हो उसी पल गुरु का जन्म दिन है। गुरु का जन्म दिन मनाते हो तो वाणी को जीवन में लाओ। वाणी में गुम हो जाओ, वाणी में खो जाओ। वाणी ही सब कुछ है मिट्टी कुछ भी नहीं है। काहे का जन्म दिन। ये माला, ये प्रशाद,

ये केक खिलाने के बजाय यदि तुम अपने आपको चढ़ाओ तो तुम्हारा बेड़ा पार हो जाये। मैं तुम्हारा गुरु हूँ। यहाँ जो कुछ लाते हो मेरे लिये लाते हो। पहले ये दृढ़ करो – यहाँ मैं ही हूँ। जो कोई माला, मिठाई, प्रशाद लेकर आते हैं वो मेरे लिये ही लाते हैं। यहाँ नहीं लूंगा, बाकी दूसरी जगह दो, वहाँ लाओगे तो मैं ले लूंगा। यहाँ मैं बच्चे चाहता हूँ। चढ़ाओ अपने आपको। फिर दुनियाँ के पीछे, माया के पीछे मत दौड़ो। यहाँ पर मैं सोयम् बैठा हूँ। मेरे सिवाय कोई नहीं है। जो कुछ है ये वाणी है। ये वाणी तुम्हें क्या बताती है? तुम्हारी आत्मा सोई हुई है उसे जगाती है। ये वाणी तुम्हें क्या बताती है जो अविनाशी है जो जन्म-मरण में नहीं आता, जिसने तुम्हें जन्म दिया है, तुम्हारी बिगड़ी उसके हाथ में है। गुरु तत्व अविनाशी है, गुरु तत्व का कोई जन्म नहीं होता। गुरु तत्व सदा कायम रहता है। गुरु तत्व आता है तो जगत् को मार्ग बताता है सत् पर चलने का। जो वाणी यहाँ से बताते हैं उसका नाम नहीं है ना उसका जन्म दिन है ना मरण दिन। एक चोले से काम करता है वो चले जाता है दूसरे चोले में आ जाता है दूसरे चोले से काम होता है वो चले जाता है तो तीसरे चोले में आ जाता है उस चोले से काम होता है वो चले जाता है। दूसरों को राह बताने के लिये सत् मार्ग बताने के लिये सच्चा मार्ग बताने के लिये। गुरु का ना कोई नाम है ना कोई रूप है, ना आना है ना जाना है। गुरु का नाम गुरु का रूप गुरु की वाणी है। जो गुरु की वाणी में विलीन हो जाता है वो गुरु में विलीन हो जाता है एक हो

जाता है। गुरु अनाम है, अरूप है, एक है, चोला मैंने सेवा के लिये रखा है। सेवा का कार्य पूर्ण हो जायेगा, जिस दिन काम पूरा हो जायेगा चोला गिर जायेगा एक पल नहीं रहेगा। ये तो मिट्टी है गुरु सदा कायम रहेंगे। ये शुद्ध, निर्मल, पवित्र, पावन, ज्ञान तुम बच्चों को दिया है। जो इसका मनन करेगा, शुद्ध मन से मनन करेगा वो बड़ी आसानी से इस भवसागर से तर जायेगा। ये सोयम् मुझ पारब्रह्म साईंनाथ का दिया हुआ है। इसको पढ़ो जितनी बार पढ़ोगे इसमें से हर बार एक नया अर्थ समझ आयेगा, एक नई गहराई दिखाई देगी। मनन करते जाओ। ये ही समझाने का है। मेरे सिवाय कुछ भी नहीं है जो कुछ है एक मैं हूँ। सुख-दुःख मैं ही देता हूँ। सुख-दुःख को मेरा प्रशाद जानो। न सुख में बहुत सुखी होओ न दुःख में बहुत दुःखी होओ। दोनों को मेरा प्रशाद समझ कर सिर माथे पर लो। ये ही मेरी कृपा पाने का मार्ग है। ये ही समझाने के लिये मैं बार-बार यहाँ पर आता हूँ।

ईश्वर की भक्ति सदा सुख देने वाली है। जीव की पूरी तरह से रक्षा करने वाली है। इस बात को अच्छी तरह से समझना है। दृढ़ करना है।

जो तोहे राम मिलन का चाव।
सिर धर तली गली मेरी आओ।।

अपना सिर काट कर हथेली पर रखो। मैं मिल जाऊँगा। इसीलिये मैं यहाँ पर रोज़ कहता हूँ अपने को मिटाओ। अपने आपको मिटाये बिना मैं मिलता नहीं हूँ। हम दुनियाँ की सबसे ऊँची चीज़ पाने को निकले हैं तो कीमत तो देनी ही

पड़ेगी। जब तक अपने आप को गंवाओगे नहीं मैं मिलूंगा नहीं। मैं चाहता हूँ इसी बात का प्रचार यहाँ से होना चाहिये। ये करोगे तो इसका फल मिल जायेगा लेकिन जो बीमारी है, मूल है, वो जब तक नहीं खतम होती जन्म-मरण का चक्कर चलते ही रहेगा। मेरे को बार-बार तुमको कहना है निकालने वाला मिला है तो निकल जाओ। मैं ही बोल सकता हूँ, तुम मेरे हुक्म में रहो, अपने को मिटा डालो मैं सब कुछ तुम्हें दे दूँगा। अपने को मिटा डालो मैं तुम्हें पार लगा दूँगा। ये मेरा वचन है। मिटा दो अपने आपको पुस्तकें लेकर निकलते हो तो ये teachings बताओ – अपने को मिटाओ। जब तक अपने को मिटाओगे नहीं मेरे को, बाबा को नहीं पा सकते।

किसी शायर ने कहा है "तूने ही दर्द दिया, तू ही दवा देना" अब तू ही इस रोग की दवा दे। हमें इस भयानक चक्कर से निकाल। तुम जितना-जितना अपने को निकालते जाओगे उतना-उतना तुम मिटते जाओगे। तुम जितना-जितना अपने को मिटाते जाओगे उतना-उतना अंदर मुझमें मिलते जाओगे। इस सच्चाई को समझने का है। बच्चों की रक्षा करना मेरा काम है।

माता-पिता और गुरु का अनादर मैं कभी माफ नहीं करूँगा। साईं-गीता के ये तीन मुख्य गुण हैं। "खेल करन मैं आया जग में खेल करन मैं आया, भक्त जनों को पार करन को साईं गीता लाया" खाली लाया ही नहीं साईं गीता का एक-एक शब्द सिद्ध करके दिखाया।

करो मेरे खेल का प्रचार बच्चों तुम्हारा कल्याण होगा। सारी दुनियाँ को बताना है खेल करने को ईश्वरीय शक्ति आई हुई है घर-घर में ये संदेश पहुँचाना है। शिर्डी में जितने लोग मेरे दर्शन को आते थे सब कुछ समझा कर आखिर में ये ही बताते थे कर्म का फल भोगना ही पड़ता है। कर्म सोच कर करो। कर्म के फल से कोई नहीं बच सकता। जो जैसा करता है वैसा भरता है। सबका भला चाहो किसी का बुरा मत करो। ये ही शिर्डी में मैं सबको बताता था कर्म का फल भोगना ही पड़ेगा कोई गलत कर्म ना करे।

मुझ तक पहुँचने का केवल एक ही रास्ता है गुरु के द्वारा। बच्चे के द्वारा हम माँ की तरफ बढ़ेंगें तो माँ प्यार करेगी, नहीं तो धक्का देगी। ये बच्चा दो कार्यों के लिये ही जगत् में आया पहला निष्काम भक्ति का प्रचार करने दूसरा गुरु महिमा स्थापित करने। जगत् को सिखाने आया कि निष्काम भक्ति ही सब कुछ है। सकाम भक्ति में किसी को कुछ नहीं मिलता। तुममें से हर एक को अपने-अपने मनों में झाँक कर देखना है हमारी भक्ति निष्काम है कि सकाम है। यदि संसारी वासनाएँ हमारे मन में उठ रही हैं तो हम भगवान का नियम तोड़ रहे हैं, हमारी भक्ति अभी निष्काम नहीं है।

मैं गुरु महिमा बताने के लिये जगत् में आया हूँ। मैं जिसको जो कुछ देता हूँ गुरु रूप से देता हूँ। जिसकी गुरु चरणों में सच्ची भक्ति है वो सब कुछ पा लेता है। बच्चे के द्वारा माँ मिलती है। बच्चे को छोड़ कर माँ नहीं मिलती और

माँ का ये नियम किसी के लिये टूटता नहीं है। जितनी भी गुरु वाणी होती है वो मेरी वाणी है, नाम बच्चे का होता है, शरीर बच्चे का दिखता है, कोई झूठी बात नहीं है, कभी मैं बोलता हूँ, कभी जगत् माता बोलती हैं। इस वाणी ने दुनियाँ में बहुत बड़ा काम किया और कर रही है। बहुत लोग इस वाणी के द्वारा साईं गीता और अमृत सागर से अमृत पी रहे हैं। सच्चाई और सादगी के बिना जीव सच्चाई में नहीं चल सकता। माता-पिता और गुरु का अनादर करने वाले घोर से घोर नर्क में जाएँगे। एक को भी नहीं छोड़ूंगा भयानक दण्ड दूँगा। इस सच्चाई को समझने का है। फिर गुरु के द्वारा मैं जगत् को दृढ़ करा रहा हूँ बूढ़े माता-पिता शंकर-पार्वती का रूप हैं घर में। घर में जो साक्षात शंकर पार्वती हैं हम उनका अनादर करते हैं। मैं छोड़ूंगा नहीं। गुरु तो सौ में से निन्यावे के नहीं होते तुम्हारे तो हैं। माता-पिता की सच्चे मन से सेवा करना जीव का परम धर्म है। माता-पिता और गुरु की सेवा में शक्ति है। जो जीव को दिखती नहीं है पर जीव की पूरी रक्षा करती है। साईं गीता तुम्हारी सबकी माँ है। जब बहुत दुःख आ जाये, बचने की कोई उम्मीद नहीं हो तो साईं गीता दान दो। साईं गीता पढ़ो, साईं गीता सुनो, साईं गीता का दान करो, भयानक से भयानक पाप कट जायेंगे। अंत समय में साईं गीता पढ़ना मत भूलो। अन्त समय साईं गीता पढ़ोगे तो पार हो जाओगे। सबसे बड़ी बात, जिसके लिये मैं हरिद्वार में दो दफा आया। सच्ची माँ की भक्ति – माँ का आशिर्वाद लिये बिना सेवा नहीं हो सकती।

आज तक जगत् में जीवों का उद्धार माँ की कृपा से हुआ, माँ का भजन करना लाजमी है। जब तक माँ का भजन नहीं करोगे मेरे को नहीं पा सकते। पार्वतीपते हर! हर! हर! माँ को साथ लेकर पुकारो मैं फौरन सुनूंगा। माँ की कृपा ही सब कुछ है। ये सब शक्तियाँ दिखाने के लिये मैं बच्चे को साथ लाया हूँ। पार्वतीपते हर! हर! हर! भगवान के सब रूप बाबा के ही रूप हैं। बाबा ही सब कुछ हैं। भेद नहीं है। अच्छी चीज़ जहाँ से मिलती है वहाँ से लेना है गुरु ग्रंथ साहब की वाणी है –

मत कोई भरम भुलै संसार।
गुरु बिन कोय ना उतरस पार।।

किसी ने भूलना नहीं है। सच्चाई किसी भी कोने से आये उसे **reject** मत करो। ना मत करो, उसको मंजूर करो शुद्ध हृदय से, पार हो जाओगे।

जै मैय्या

"ॐ श्री साईं"

"जै जै दाता आनंद साईं"

The Master's Message
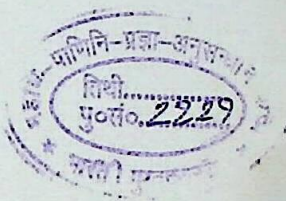
Blessings are My gift. Rare is a person who gets My blessings. You are pure souls. Go on with your devotion and Bhav. Bhakti washes away all ills. Be in the service of the [illegible] and He, in return will be in your service

Om Sri Sai

12-VIII-86.

Published by- Sai publications, Nagpur.
Printed at - Mudrashilpa, Nagpr.

Price Rs. 10/-